

## KARMADEVI,

UR

#### THE RAJPUT WIFE.

# কর্মদেবী।

## রাজস্থানীয় সতী-বিশেষের

চরিত্র।

গ্রিযুত রঙ্গলাল বন্দ্যোপাধ্যায়

कर्ज्क

विविध ছम्मावरंश्व

অনুকী ভিত।

#### CALCUTTA:

PRINTED BY C. B. LEWIS, BAPTIST MISSION PRESS. 1862.

### भक्षा हर्।

প্রম-প্রেমাল্লদ-বন্ধ্ ত্রীগুজ বাবু রাজে**লুলাল মি**ত্র মহাশয় মদনুকূলবরেয়ু '

প্রির মিত্র।

আনার আন্তরিক শ্রকার উপায়ন-স্কপ পদ্মিনী-তপ্রেমন এক সদাশতের চর্তে সমর্থন করিয়াছিলাম। ।এই ৮বং প্রগ্র- ঋণের জুলীদত্ত জি-স্বরূপে কর্মাদেরীকে আপে• লারে আছু সম্ভাদনে করিলাম। আপনি সাপু উত্তমর্ণ, সুতরাৎ জনশ্যন প্রসন্ধিত্তে এই রুদীববৃদ্ধি স্বীকার করিবেন, এমত ভবনা হটতেছে।

নাম্রজদা गम्तक्षा ७० (म आसार, ) जनस्वत्र्वासूत्राती ा क्षिक दर्भ

শ্রীরঙ্গলাল বন্দ্যোপাধায় !

## ज्यिका।

পদ্মিনী উপাথাানের শেষে এই পুতিজ্ঞা ছিল;
" শুন হে পথিকবর, মান্ত হলো অভঃপর,
মনোহর পদ্মিনী-আখ্যান।
বিদি আরু থাকে ক্লা, যোগাইৰ কাৰামুধা,
এই রূপ হাদে পরি গ্যান।"

গ্রহাণ পর্মান্দ্রাদ-সহকরে বক্তব্য এই যে, যে
লগ্যের প্রতি দৃষ্টি রাখিল উক্ত কার্যকুসুম বিক্ষেপিত
ক্লাছিল, দেই লখ্য বাথ হয় নাই। লহেদ পূর্বক
বিত্রে পারি, পাল্লনী-প্রকাশের পর গত বংদর-জয়-মধ্যে
লাগ্য দিনের দেশীর ভাষায় ভারিতা বিমলানন্দায়িনী
কবিষার প্রতি কথ্পিং দেশীয় লোকের অনুরার জ্মিশ্
রাছে; কোন কোন প্রচুর মাননিক শক্তিশালী বন্ধু মান
কার্ছে, কোন কোন প্রচুর মাননিক শক্তিশালী বন্ধু মান
কার্ছে, কোন কোন প্রচুর মাননিক শক্তিশালী বন্ধু মান
কার্ছিলেন, ভারার অপুনা মাতৃভাষায় উত্তমোভ্তম কাব্য
প্রথনন কার্ছাছেন, অতএব ইহাও নাধারণ আনন্দের বিষয়
নহে। ভাষা নালস্কৃত এবং বহুলাক্ত করণার্ধ কবিভার
নায় গদ্যের উপযোগিতা নাই, অতএব স্মুতি বিশ্বদ্ধ
গদ্যানুহ লিখনের যেরপ উদ্যোর হইতেছে, সেইকপ সংক্
কবিতা জননার্থ যথাযোগ্য উৎসাহ-প্রদান-করা কর্ত্ব্য।
পরস্ক কাব্যোপযুক্ত বিষয় কবিভাতেই গ্রেথিত করা

বিধেয়, পুরাবৃত্ত এবং পর্মনীতি তথা বিজ্ঞান-বিদ্যা ঘটিত পুস্তুক দকল গদে৷ লিখনের প্রয়োজন: কিন্তু প্রথমোজ বিষয়ের কথন কথন ব্যত্যয় জন্মিতেছে, এতদ্ধনি দহদয়-বর্গ দস্তুট্ট নহেন; তথাপি নংকাব্যের যে দিন দিন দমা-দর-বৃদ্ধি কইতেকে তালাতে আরু সন্দেহ মাত্র নাই অতএব এই কর্মাদেবী হীয় অগ্রুহা পরিম্বার ন্যায় লাগা-রণের কিয়ৎ অনুগুহের পাত্রা হইবেন, এনত বিধান হইতেছে।

প্রস্থাবাবদানে ইছাও বক্তন্য, আমি রাজকার্য্যে দ্র-স্থানে নিযুক্ত থাকাতে মৃদ্যান্তন-কালে ছানে ছানে লিপি-প্রমাদ হইয়াছে, তদ্যোধ-উপশ্মনার্থ পাঠ্যুগণের করণা-ধণের শর্ব লইলাম। ইতি।

## গুদ্দিপত্র।

| 179        | <del>,</del> ( | পণ্ডি      | ī   | তাশুদ্ধ       |            |      | <b>3</b> %             |
|------------|----------------|------------|-----|---------------|------------|------|------------------------|
| 8          |                | ٥, د       |     | ड,का          |            |      | 87 <b>(2)</b>          |
| ۲,         |                | •          | ••  | কারেলর 🕻      | Le         |      | मारलत                  |
| : 0        |                | ₹*         |     | ধ্নকতি        | र दर्श     | ূ দে | ধন্যতীহয়েছিল          |
| ÷ 1,       | • 1            | ۵          |     | व्यानिया      |            |      | '' জানিয়াছ            |
| , 6        | .,             | 9          | 1 4 | দে হিল        |            | • -  | ্ম:হিল                 |
| >;         | ٠.             | 8          | , , | যোগার         |            | ••   | হাভার ়                |
| ^ <b>ર</b> | • •            | > 0        | • • | માંડ્ર લ      | • •        | • •  | শ্রণ                   |
| . 4        | . 1            | 3          |     | क्षांशीस      | ভাষ        | নাধী | ন:-ডানে মানে সুপ্রতীগা |
| • •        |                | >9         |     | मञ्ज          |            |      | স্ট                    |
| د* ،       | 4 .            | 74         | • • | ছার্          | ••         | • •  | পুরে                   |
| '1         |                | \$ 5       | • • | म् ब्रे       |            | ••   | महें                   |
| رب         |                | 23         | • • | পলিড          | • •        | 4.0  | <b>টা</b> কৈন্ত        |
| .)4        | ,              | 8          |     | ভ,ধিরা        | • •        |      | অধীরা                  |
| <b>.</b>   |                | > 2        | • • | প্যসি         | ••         | •    | প্রেয়দি               |
| 145        |                | >>         |     | য়াথকা        |            |      | <b>দূ</b> িথকা         |
| 8.         |                | 25         |     | জাড়ম         | • •        |      | জড়ি <b>য</b> ়        |
| 83         | ٠.             | <b>ર</b> ર | • • | <b>इ</b> :८५  | ••         | • •  | शत्म                   |
| \$ 3       |                | ۵          | • • | ক্ষনে         | • •        | * •  | ক্ষণে                  |
| 6.5        |                | 74         |     | ছায়          | ••         | ••   | ছায়া                  |
| 89         | • •            | >          |     | হাস্যধ্       | ۹.,        | •    | হাদ্যাধর               |
| * 1        | • •            | > 0        | ••  | শূর           |            | • •  | <b>ड</b> ँড़           |
| Str        | • •            | २ •        |     | পান           | ••         | • •  | পানে                   |
| :,         | ٠.             | २३         | ٠.  | গহ নাঃ        | য়ত        | • •  | গন্ধ নাসাতে            |
| ,,         | ٠.             | ২8         | • • | <b>দির</b> হে | 1          | • •  | সির কেকা               |
| 82         | ٠.             | 9          | ٠.  | প্রয়ানে      | ••         |      | প্রাণে                 |
| <b>F</b> 2 | ,43            | >          | • • | পৌরু-গ        | <b>गटश</b> | • •  | পৌরুষ পথে              |
|            |                |            |     |               |            |      |                        |

| 9              | <b>8</b> 7 | পথ  | ক্র | <i>তা</i> শুস্কা |           | <b>राक्ष</b>                          |
|----------------|------------|-----|-----|------------------|-----------|---------------------------------------|
| 35             | ٠.         | 29  |     | শার্দ্দলের       |           | ना क्रांक्टल्ब                        |
| 1,             |            | ,,  |     | উপানহ            |           | उपाय इ                                |
| œ২             | ٠.         | > 2 | ٠.  | जिंदगत           |           | বিশে <b>ন</b>                         |
| G Q            | • •        | 8   |     | ý.a              |           | ₹एक                                   |
| 53             | • •        | >₹  | • • | कांत्री, क्रम्   |           | হাতী- লম্ব                            |
| ¢ y            |            | 3   | • • | প্রতি হাট 🐪      |           | প্রতিক্ত                              |
| ৬৮             |            | >>  | ٠.  | নাতি হারে গ      | (প্রক্র), | . ২ <sup>া</sup> ভিকিকাগের <b>ক</b> • |
| ৭২             | ••         | 8   |     | কেশ ু , ,        |           | (Z*f                                  |
| 29             | - •        | 24  |     | স্ভিনী           | • •       | मञ्जिली                               |
| *<br>*)        |            | 29  |     | इकिरी.           |           | त्रक्रिपी<br>-                        |
| 23             |            | 24  |     | ? : 1            |           | ৰ তি                                  |
| 9,             | ۰.         | 7,3 |     | अधिकारी          |           | र किभी                                |
| 93             | • •        | 24  | ٠.  | নাহি আর          | Eg        | নাতিক অপর                             |
| 98             | • •        | ર૦  |     | ∙ফ্ষ⊹• ∴         | ••        | ্নুল<br>নুল                           |
| 93             | ••         | ×   | • • | क्या, हिल्ल      | 2 .       | ভা টুর                                |
| "              | • •        | 26  | • • | क्षां(इस         |           | ভ'টুর                                 |
| 92             | * •        | >>  | • • | कील              | **        | र्नोभ                                 |
| <del>५</del> २ | • •        | 59  |     | <u>चीम-स्टर</u>  | • •       | ভীমাধ্বে                              |
| ४४             | • •        | >   | • ^ | প্রেম            | • • •     | অ শা                                  |
| ,,             | ••         | 28  | • • | ভালায়           |           | <b>ত</b> ায়                          |
| 42             | • •        | 29  | • • | मजिनी            | • •       | मक्रिभी                               |
| 22             | • •        | 9   | • • | ক্ষণ             |           | <b>ক</b> ষণ                           |
| \$ 2           | ٠,         | 20  | • • | ٠٠. ١٠٠٠         |           | পুত্ৰ                                 |
| పరి            | •• •       | ¢   | • • | মনত              | • •       | মনোমত                                 |
| 26             | ••         | >   | • • | আহে রে           |           | আহত রণে                               |
| 29             | • •        | रेर |     | নিৰ্কাচিতি       | • •       | ্দি হাতিত                             |

## क्यां(पती ।

#### स्ट्रा

প্रजिती-अपक-ग्रा, श्राधिक मुजन, শ্রতিপথে খান কবি পরিমপ্ত মন। क्षा-शरीक्षान श्रम भागक (सम्ब शाहीरल योगात धारम मधत भारीन. ফ্রাবে গিরামে গাত, তথু জান **হ**য় अप्र-ित्रा नारा शाम मुभागर, দেনীয় হ পাখিকের হাটল বিভুম, আন্টিভর। পালিমী। কথা মনেরেম। পল্লি-সভাত্-কথা অপুন অংখ্যান, ভাবক হছিল কলে ধরি দেই ধ্যান। প্রিনীর শেষদ্শা করিয়া মারণ, পথিকের বাছজান হটল হরণ। ভারতরে কেঁপে উচে মান্দক্ষন প্রভাত-সমীরে যথা ফ্ল-শতদল। नरान-युगाल ज्ञां विन्द्र विन्द्र करत् নিশার শিশির-কণা যেন ইন্দাবরে। নির্থি সাত্ত্বিক ভাব, কথক ব্রাহ্মণ, কহিছেন পথিকেরে করি সম্বোধন---"উঠ হে পথিকবর, ভাবুক-প্রবর, ভাব-নিদ্রা হর, বেলা ভূতীয় প্রহর। 'n

অই দেখ গোধন-মহিষ-মেষদলে. ছায়া হেতু দলে দলে ভরুতলে চলে। গোষ্ঠ-তেজি হাম্বারবে উচ্চে পুচ্ছ বুলে সমাকুল বৎসকুল ধায় বৃক্ষ-মূলে i প্রথর ভারুর করে প্রবল পিপাসা, পানি পাতি প্রবাহের পর পিয়ে চারা। (यमिनीत धीनवुड--सङ्ख मयुम्य, **(कवल मधीत श्रीत, श्रीत** श्रीत वरा: ---क्तिवन मत्राममन क्त्रि मम्कन. সম্ভবে বিহরে মথা বিকচ কমল:--কেবল বিটপী-বটে বসন্ত নিশ্ল আলাপিছে মৃদুতান সহ নানা থগ;----কেবল নিকরে ধ্বনি কল কল কল, উনরিছে কত শত কোটি মৃক্তাফল। অই দেখ ঘাই মেরে সর্গী-হৃদ্যে भोनहरू प्रध हरू निक मल नरर । বিগত তৃতীয় যাম পদ্মিনী কথনে, এলো এলো হে মুজন মম নিকেতনে। আতিথা পুহণ আর বিশ্রাম অন্তরে, পরিচয় আদান প্রদান পরস্করে।"

য়ান করি সরসীতে রিগ্রন্থন,
আত্মেতে চলিলেন বন্ধু দুই জন।
কুষা ত্যা ক্শা; বিভামেতে বিলসিভ,
নানাবিধ ইফ্রালাপে হয়ে হরষিত,
জিজ্ঞালেন পথিক—" বলহে, কৃপাকর!

মরুদেশে \* আছে এক রমা সরোবর, কর্ম-সরোবর নাম পুণাতার্থ স্থল,---অদূরে মণ্ডপ এক ধবল উজ্জল,---অপুর্ব্ব উপলময়ী প্রমদা প্রতিমা, মণ্ডপ-মাকারে শোভে, রূপে নাছি দীমা। अनिलाम क्यार्पियो नुश्रन सिनीत পাষাণ-প্রতিমা দেই, শোভিত রুচির: কেবা দেই কর্দেরী কিবা কথা তাঁর ? কেন দে স্থাপিতা মূর্ত্তি অপ্নরা আকার? (कन कर्य-मद्दोवत मत्मीत नाम? বিশেষিয়া পূৰ্ব্ব কথা, কহ গুণধাম।"

छनि कर्यादवी नाम, जृददव-मग्राम গ্রুক্তাকার অশ্রু উদয় স্বনে,— উদয় হইবা মাত্র ঘনীভূত হয়, যথা নীহারের বিন্দু হেমন্ত-সময়। মানস-দরসী-জলে জলজের দলে হিমানী আকার ধরে প্রতি পলে পলে!

চকিত স্থগিতনেত্রে গদ গদ স্বরে কহিছেন, সম্বোধিয়া ভাবুক প্রবরে।

''ভানিবে কি হে সুজন, কর্মদেবী কথা? বিবরিব অনুপুর্বে শ্রুত আছে যথা: সভীত্ব সাধ্বীত্ব গুণে বরণীয় অভি, পদ্মিনীর সমতৃল্য হন দেই সভী।

<sup>\*</sup> **আধ্**নিক নাম মার্বার

অদ্যাপি তাঁহার গুণ, এই রাজস্থানে,
গৃহে গৃহে গাঁত হয় শারস্কার তানে।
আন্রে মধুর যন্ত্র শারস্কা আমার,
বহুদিন করি নাই আলাপ তাহার।
বহুদিন নাগদন্তে কুলান রংগছে,
যন্ত্রি-অনাদ্রে যন্ত্র অভন্ত হংগছে।"

আজামাত্র, শারঙ্গ যোগার পরিচর, মিলায়ে মূর্চ্ছনা মার্গ, দিজ গুণাকর আরম্ভিলা সন্ধ্যারাগে কর্মদেবী-কগা। প্রদোষেতে অনুষ্ঠিকালে ভৃত্তনাদ যথা।

## পুথম সর্গ।

যশল্মীর-অনুঃপাতি দেশেছিল ভট্টিছাতি, অধিপ অনঙ্গদেব তার। পুগল দেশের নাম, তাঁর পুত্র গুণধাম, সাধুনামা, বিক্রম-আধার॥ মহা পরাক্রান্ত বীর, কভু নহে নত শির,

প্রভাপেতে প্রথর-তপন। সঙ্গে সব সহচর, শূরবীর পরিকর,

প্রভুর দেবায় প্রাণশ্বণ ॥ হচ-সম্মে হর্ষ অভি, হুই ছুই সদাগভি,

সদাগতি পরাত্ত তায়।

দড় বড় দড় বড়, অস্বচালনায় দড়,

ভোট বড় জানা নাহি যায়॥

इय यात मानावथ, भार मिनटमत अथ, পাঁচ দণ্ডে উপনীত হয়। ধনিক বণিকগণ, ভাত-চিত অনুক্ষণ, कथन् जानिएय नुष्टे नय ॥ বাল বুদ্ধ বনিতারে, সদা তোমে সদাচারে, यथा नमान्द्र तुक्ता कद्र। কিন্তু মিলে সমযোগ্য, সমর রসৈর ভোগ্য, একেবারে ভীমবেশ ধরে 🏽 বিশেষ যবন পুতি, সরোষ আকোশ অতি, অলিভাঙ্গ হয়ে একেবারে। লাফদিয়ে চড়ে ঘাড়ে, ভূমিতলে টেন্যে পাড়ে, শত থণ্ড করে তরবারে ॥ পূर्खिं निता विक्षानी, शिक्तारे निक्निनी, সাধুর শূরত্ব-অধিকার। विनमन \* प्रश्वेती, यथा थत त्वि- छवि, মরীচিকা করে আবিষ্কার। ব্যাপিয়া বৃহৎ দেশ, নাহি বারি-বিন্দু-লেশ, নাহি ছায়া, নাহি তরু লতা। দুরে থেকে দৃষ্ট হয়, অপরূপ জলাশয়, তাহে চাকু ভটিনী সঙ্গতা ॥ হটে পুফাউপবন, শোভা পায় দুশোভন, बुक्क-वन्नी छाशा करत मान। আন্ত-পাত্-চিত্তহর, নয়নের তৃপ্তিকর, ভাল বটে, ভাগুর এ ভাগ 🛭

**<sup>\*</sup> কুরুছেছেতের পশ্চিমান্তরাল।** 

<sup>. 3</sup> 

धना (म निक्नी डाँत, प्रतीहिका नाप गांत, মিথায়ে সভাের দেয় নােধ। এইরূপ মিথ্যাদ্টি, এজগতে করি সৃকি, মহামোহ জ্ঞান করে রোধ ॥ माधु अहे विस्थारम. महहद्वरान मत्म. অনায়াদে করিত ভন্ন। মরীচিকা ভুচ্ছ করি, ভয়ানক বেশ ধরি, করে।ছিল গ্রন শাসন ॥ পাঁচ হাতিয়ার ধর: আপাদ মন্ত্রপরা. অয়শ্রু চিত পরিচ্চদ। দুশোভিত সন্হন, শব্হয় কন্কন্ ফকু মক ফলক বিষদ॥ শীতল কঠোর ধর্ম, অসিচর্ম আর বর্মা, দাজ শ্যা তাহাই দকল। ছালেতে রাখিয়ে শির, নিদু: ফেত যত বীর কিছু মাত্র না হয়ে বিকল।। (महे जाम शिष्ठ जन, (महे जाम (श्रु कन) দেই ঢাল ভোজন-ভাজন। करिटिए हे इसुराम, † हेसुराम भवकाण, তাহে সিদ্ধ নানা প্রয়োজন।। দিবা নিশি এক সাজ অভিপ্রেত এক কায, অস্ত্র শস্ত্র তিলেক না ছাড়ে। ু বীর-রুসে বিচক্ষণ ভাই মাত্র আলাপন উগ্ৰহা অনল হাড়ে হাড়ে।।

<sup>†</sup> **उत्**दादी रिल्मस।

এত যে উগ্রভা রদ, কিন্তু কামিনীর বশ, শিব যথা শৈলজার প্রতি। करनात जन्तान, जहात मारान गान, সতীর দেবায় রতি মতি।। यथा मिला मिल्राम, विভবে मधुत घान, বিকশিয়ে কাখারী কুদুম। কচোর শিলার ধর্ম, কচোর তাহার মর্ম, কিন্তু ভাহে জনমে কুন্তুম।। সতীর সেবায় মন, প্রাণপণ আকুঞ্জন, মতীর মন্নাম রক্ষা হেতু। অপ্রিত্র ভার হান, কুর্ম বামনা লীন, সভয়ে পলায় মীনকেছু॥ সরল অথল সবে, ভাসমান প্রেমার্ণবে, मगाভাবে মুথে কাল হরে। पृश्या जार्थिषे वस्त, प्रत्य प्रत्य लाक मस्त, কালান্তের কাল মূর্ত্তি ধরে।। কারুপুতি ক্ষমা নাই, হউক আপন ভাই, সমুচিত শিক্ষা দিবে তারে। অন্যায় না সহা হয়, মিখ্যাবাদ নাহি সয়, সভ্যের পরীক্ষা তরবারে।। হায় কোথা সেই দিন, ভেবে হয় তনু ক্ষীণ, এযে কাল পড়োছে বিষম। সত্যের আদর নাই, সতাহীন স্ব চাঁই, মিথ্যার প্রভুত্ত পরাক্রম।। नव পूक्षाई भूना, किता भाभ किंबी पूर्ण,

#### कर्छाम्बी।

ভেদ জ্ঞান হইয়াছে গত।

বীর কার্য্যে রত যেই, গোঁয়ার হইবে সেই,
ধীর যিনি ভীরুভায় রত।।
নাহি সরলতা-লেশ, দেয়েতে ভরিল দেশ,
কিবা এর শেষ নাহি জানি।
ক্ষীণ দেহ, ক্ষীণ মন, ক্ষীণ প্রাণ, ক্ষীণ পণ,
ক্ষীণধনে ঘোর অভিমানী।।
হায় কবে দুঃথ যাবে, এদশা বিলয় পাবে,
কুটিবেক মুদিন প্রস্ন!
কবে পুন বীর-রসে, জগৎ ভরিবে যশে,
ভারত ভাষর হবে পুন?
ভারে কি দেন হবে, একভার সূত্রে সবে,
বন্ধ রবে মননে বচনে?
পুজিবে সভ্যের মূর্ত্তি, প্রণয় পাইবে স্ফুন্তি,
সুথদ সরল আচরণে?

কিবা অপরপ, নির্থি অনুপ,
সাধুর স্বদলে গতি।
প্রসারিত বুক, প্রমোদ কৌতুক,
সকলে প্রসন্নমতি।।
কিবা তড় বড়, বহে যেন অড়,
তুরগোর প্রদারনি।
ফক্ মক্ অক্, আয়ুধ ফলক,
ভালে যেন দিন্মণি।।
ক্রন্ কন্ কন্ কন্ন্

ঘুখঁর ঘোড়ার গলে। হয় চয় সাজে, নানা নিধি সাজে, কিবা শোভা শিরনলে।। হেলিছে টোপর, মাথার উপর, খেত-নেঘমালা যেন। किया नही-(कारल. शवन-शिक्षारल, গেলিয়া বেড়ায় ফেন।। मत नित डेक, भारत भान-गृक, যেন দুই মেহা পশি। नना छै-फन्दक. छ छक्र-छिन्दक, বিলেথিত আগ শশী।। লোহিত কমল, নয়ন-যুগল, অলি ভাহে দুটি ভারা। চপল ভাভঙ্গি. হয়ে অঙ্গ-অঞ্চি, युनन-अश्वन-अर्ना॥ লুফিতেছে ভল, যত দৰ মল, নির্থিতে ভয়স্কর। कां भानिया जान, वियम कतान, পিঠে কুলে নিরন্তর ॥ পাদুকায় আঁটা, এরধার কাঁট্রা, অস্থের পঞ্জরে মারে। বেগ বাড়ে ভায়, বায়ু সম ধায়, अवन यूनन माद्र ।। এইরপ সাজে, অরণ্যের মাঝে, সাধুর স্বদুলে গতি।

শীহরিত কায়, পলাইয়ে যায়, মৃগপতি যূথপতি।। শুনিতে পাইল, মবন আইল, বিপাশা-তটিনী-তটে। কাফিলা কাফিলা, ছাউনী ছাইলা, জালদ্ধর সন্নিকটে।। কত উপহার, প্রকার প্রকার, সাজান হাজার উটে। মেবা নানা জাতি, বস্ত্র ভাতি ভাতি, সুরভি সুবর্ণ পুটে।। কিবা মধুরিম, বেদানা দাড়িম, (म्हरत मूर्लंड कल। नश्न-त्यान, वीटकत् वत्न. পদারাগ অবিকল ॥ ত্র বিদারিত, ইষৎ স্ফারিত, বীজের বিমল রেখা। যেন কামিনার, দশন ফুচির, श्रृ श्राम (प्य (प्या ॥ কিবা অপরূপ, নাহিক স্বরূপ, মধুর আঙ্গুর ফল। অতি মনোহরা, সুধা দেহভরা, (मथा याग्र मुविपन ॥ ছার গ্রুমতি: নাহি তাহে রতি, माका छटन विश्वादि। शांतरम कि तम, विकि मिश् मण,

শোভা পায় সারি সারি॥ কিবা বারি-ধারা, মুকুতার কারা, কানন ছাইয়ে রয়। मूर्थ जूल नय, यिन भ्रत इय, কুষিত কৃনক-চয়॥ ধন্য দুক্তিতা, তব মধুরভা-মধুরা সুরা জননী। প্রদবিয়া কত, মধু নানা মত, प्राडाहेटन अ यत्नी॥ কিবা দেই ফল, অমৃতে বিহুল, অমৃতাহু \* যার নাম। रमव भारतमोक, इतम मूहिमक, পরম পুলক পাম॥ (मिथिटि मुन्दत, कृत्त कलिन्द्र, কাঞ্চনে সিন্দূর শোভা। সেন মনোহর, চারু পরোধর, যুবাজন মনোলোভা।। কিৰা লৈ বাদাম, ভার কিবা দাম, রূপদী নথর দাম। খেত সমুজ্জুল, শদ্য সুবিমল, বল আর বীর্যা ধাম॥ থুবানী থব্জরি, আপ্রার মধুর, (हलरताका वार्यहरू हो।

 <sup>\*</sup> সেব ফলের সংকৃত নাম।

এইরপ কত, মেবা নানামত, আনিয়াছে মোট মোট ॥ চোগা জেগা টোপ, জরীক্ষ থোপ, পায়ভাবা দশ্ভানা। खुक्दा शल्तक, मान गम्नक. व्यक्तित विद्याना नाना॥ धना (मर्डे शत्र, जत्य गारह वमू, লোম যার হেম-প্রদ্। গিরি হিমবতে, ভোটান্ত ভিন্সতে, অনেক লোকের অস॥ ধনা দেই ছাগ, কাখারে সুরাগ, उथा मृत्य काल करत। এদেশের অজা, মত ধর্মাধ্রজা, বলিতে নিয়োগ করে॥ পোদা থেদ পট্, শীতনাশে পট্, বনাৎ বিবিপ মত। मृश्थीत मञ्ज, मूलङ कघुल, (शामावन निराधिक। আনিয়াছে বাজী, তুকী আর তাজী, मिद्राक्षी रेमक्कव \* (मृत्रः। বিপাশার ধারে, হাজারে হাজারে, আসিয়ে পড়িল ভেরা। नाधू नइ शरन, न%वान अवरन, হর্ষিত মনে অতি।

\* সিশ্বদেশ-লাত ছোড়া।

চलिल मजुत, श्वत-(मामत, দিবানিশী করে গতি॥ প্রত্তিয়া আরু, সময়-বিচার, তিলেক নাহিক করে। मातानन-शाय. (घटत क्षिनाय. वृक्ती पृष्ट् शर्द्ध ॥ হল্যো হতভম্ন, ভেবে নিরালম্ব, মোগল বণিক-চয়। করে আঁকু বাঁকু, "গেরা গেরা ডাকু" चात चालार करा। আছিল গোঁয়ার, কতক সোহার, উঠে তারা তেড়ে ফ্রে। হয়ে ক্রোধান্তি, সাধুর সহিত, त्न-त्र मिल युर् ॥ ভয়াল আহব, করে কলরব, যত সব সরদার। ''মার মার মার, হোঁ হাঁদিয়ার, श्वनीव श्वनीव"॥ চোপ চোপ চোপ, তরবার কোপ, অপ্ অপ্ আঁপে ঢাল। कार्टिल गर्मानी. (काथाय प्रमानी, দেখিতে অতিকরাল॥ জান-শূন্য ধড়ে, কেহ ড্মে পড়ে, কর পদ কারু কাঁটা।

কেহ উর্ছ-নেত্রে, পড়ে রণ্-ক্ষেত্রে, काछा ननारित शाषा॥ क्रि म्थ (थाना, क्कू मूहे (धाना, প্রকাশিত শস্ত্রপাতি। (मथा याय प्राक्ति, क्षिताक माज़ी, ছাইয়ে পড়োছে ছাতি॥ দেউটী রৌসন, দেখিতে ভাষণ, ত্বালায় কাণাৎ ঠাবু। কিছুক্ষণ পরে, অন্যায় সমরে, য়বন হইল কাবু॥ कर्षिन वमाय, वज्जन मनाय, পড়িল কএক জন। माधुत मन्दर्भ, श्रुपंड दम्दर्भ, कदिएउए निर्वतन 🛚 "কেন হে এমন কাষ কর যুবরাজ? " অয়শ ঘূষিতে তব ধরণী-সমা**জ**॥ " আমরা বণিক জাতি বাশিজ্য ব্যবসা। " লগতের হিত-বুতে, ভান্যের ভরসা॥ " যথায় বিরাজে শান্তি, সুথ-সিৎহাসনে। "তথায় বণিক যায় ধন-অস্থেবে॥ " সেই দেশে কমলার বভদ্টি হয়। ''মান কিনা এই ক্থা হিন্দু মহাশয়? '' হিন্দুস্থান শান্তি-স্থান সংবাদ-প্রবংগ। "এসেছি ভোমার দেশে বাণিক্য কারণে॥ " সুথের বাণিজ্যে হয় দেশের উন্নতি। "বণিকের ধন-বৃদ্ধি তাহার দেশহতি॥ "দেখিতেছ আনিয়াছি যোগ আর উট। " এসকল নহে দেশে করিবারে লৃট॥ ' মানদেতে নাই কিছু অনিষ্টের আশা। " দুবা দিব, অর্থ লব, এই জনা আসা॥ 😶 ইথে অপরাধ কিবা কহ রাজসুত। " ক্ষতিয় সন্তান তুমি নানা-গুণযুত॥ " विद्यान्या कत् माथू, माथू नाम धत्। " কেন হে গহিত হেন আচরণ কর?" উত্তরে কহিছে সাধু, ' अन হে পাঠান। " प्रामिनाप या तलित्न मव मृथुप्राव॥ "বাণিজো বসতে লক্ষ্মী, শাস্ত্রের লিখন। "সকল দেশের তায়, উন্নতি সাধন॥ " ক্রেতা বিক্রেতার সুথ, বাণিজ্যের ফল। '' বাণিজ্যে রাজ্যের শক্তি, দাধ্য আর বল॥ " কি কারণে এ ছেন বাণিজ্য সুথ সেতু। " অবরোধ করি আমি, শুন তার-ছেতু॥ '' পুর্বে এই পুণা-ভূমি-বাণিজ্যের ধনে। " धनवि इद्योचिता, विशाव जूवता॥ " দিগ্ দিগন্তর হত্যে বাহিয়া সাগর। " এ দেশে আসিত কত বণিক নিকর॥ "বাণিক্য সামগ্ৰী নানা লয়ে যেত দেশে। ''ভারতের ধন বৃদ্ধি হত্যো দবিশেষে॥ c 2

" এক এক নগরের কত ছিল ধন। "অদ্যাপি না হয় তার দঙ্গ্যা-নিরূপণ।। " একা কান্যকুজপুরে, অপুর্ব্ব আখ্যান। " বাইশ হাজার ছিল গুয়ার দোকান॥ " সুরর্ণ-কলস-পাত্র আগারে আগারে। ''দেবালয়ে রত্ত্রাশি ছিল মুপাকারে॥ " সোমনাথ, মধুপুরী আর কালি গুরে। "নিধিপূর্ণ মন্দিরের পঞ্চরে পঞ্জরে॥ " কে হ্রিল সেই সব অমল্য রতন ? " (क इतिल (म मकल कुरवरत्त्र धन ? " কে করিল পুণা ভূমি, দুংথেতে নিক্ষেপ ? ''কে দিল ভাছার দেছে যাতনা প্রলেপ? " অনুপমা ভারতের পতিবৃতা গণ। " কে করিল তাহালৈর মর্যাদা হরণ? "কে করিল নগর নিকর শোভা নাশ? "ভোমরা জামনা কি হে দেই ইতিহাস? " যেই দুষ্ট দুরাশয় হরিল এসব। " ভোমরা ভাহার জাতি, জ্ঞাতি, গোত্রভন "হাজার মঙ্গল-বুতে হয়ে এদ বুতী। "বিশ্বাস না হবে আরুর ভোমাদের প্রতি॥ " এরপ বাণিজাছলে কত জাতি এসে। "ক্রিলেক প্রভূত্ব-স্থাপন নানাদেশে। "অভএব কিবা প্রীতি তোমাদের প্রতি? " দুর্গতির প্রতিফল, স্বরূপ দুর্গতি 🛭

"কি ছার বাণিজা দুবা এদেশে এনেছ? "তোমাদের দেশ বড় উর্ত্তর জেনেছ? " জান না ভারত-ভূমি লক্ষার আবাদ? "কত শদ্য জন্মে ইথে বিরহে প্রয়াদ ? ''কোন্''মেবা'' নাহি জন্মে ইহার ভিতর ১ '' करता अरमा। श्यानरः नयनरनाहत्॥ '' ঈরাণেতে যত "''মেবা'' জনমিয়া থাকে। ' এ দেশের কত স্থানে কত বৃক্ষে পাকে॥ '' তাভিন্ন অনেক '' মেবা'' হেনরূপ আছে। ''এ দেশ ব্যতীত আর কোথা নাহি বাঁচে॥ ্র্সালু রসাল ফল, কিবা তুল্য তার? " সিন্ধু-মথা সুধা চেয়ে মিন্ট তার তার। " আর এক ফল ফলে শ্নোর উপর। " কারণ-দলিলে পূর্ণ তাহার উদর॥ " এমন শীতল মিষ্ট কোথা আছে নীর? '' পান মাত্র ভৃষিতের যুড়ীয়া শরীর॥ " কিবা শদ্য সুমধুর আস্বাদে উল্লাস। '' পথিকের শ্রান্তি-ক্লান্তি-কুধা-তৃষ্ণা-নাশ॥ " আর এক ফল আছে, নাম আনারদ। " নন্দন-কানন-থেকে বুকি আনা রস।। " নন্দনপতির ন্যায় সহসুলোচন। " छेन्। व फेंक्सन करत काश्यन-वत्र ।। . ''শিরেতে পরব গুচ্ছ, পুচ্ছের আকার। " হেম্মুর কিরাট কাননে অবভার ॥ c 3

<u>برا</u>

" অপূর্ব্ব দৌরভাগেদে, মেতে উঠে মন। " আঁকে আঁকে ছুটে যুটে মধকর গণ ॥ " বিফলে ছুটিয়ে আদা, বিফল দে যোটা। " অলার অসাধা 🏙তে রস এক ফোঁটা॥ " যথা কৃপণের ধনে, যাচক বঞ্চিত। " গভায়াত সার, লাভ না হয় কিঞিৎ॥ '' এই রূপ, কত রূপ, এ দেশেয় ফল। " विरम्धिया वाङ्ला वर्गन समकल॥ ' আনিয়াছ বদন, সুগন্ধ, সঙ্গে যাহা। " এদেশের দুর্লভ কিছুই নহে ভাহা॥ " ঢাকা কাশ্মীরের তত্ত্বে, কি শিল্প চাত্রী। " অপরপ শোভাগনে মন করে চুরি॥ "এই দেশে কুদুম, কন্তুরী, মূগমদ। " এই দেশে काला छक्न, हम्मन, वियम॥ "এই দেশে মল্লিকা, যূথিকা, আর জাতি। " এই দেহশ মালতা, খেবতা নানা ভাতি॥ " अलाह, नवझ, माक्रहिनी, काय्यक्त। " जशिको, कर्पूत, চ্য়া, পূন, আদি कन॥ " अक्रम ज्यानक मुता जनस्य । (मरम । ''পূর্ব্ব-পয়োধির দীপ-মালায় বিশেষে॥ " আমোদে আমোদ পেয়ে প্রভাত পবনে। " शारमामग्र रुग्न वृक्त-वातिधि-वम्दन ॥ '' (नहे नव चार्य मूगन्न मुवा हर। " ভারতের নানা হাটে মূপে স্তুপে রয়॥

''ভারতে না জন্মে ফাহা, না জন্মে জগতে। "জগতে সক্তে ইহা গ্যাত ভালমতে॥ "এই দেশে এত বিধ দুবোর প্রকাশ। "এই দেশে এত বিধ লোকের নিবাস॥ ' অনা দেশে গতি বিধি প্রয়োজন নাই। " स्थात सार्म धनी (श्क, अहे ठाई ॥ ''লয়ে যাও বত পার পেস্তা আঞ্রোট। "नए याउ (वनाना नाड़िम सावि सावि ॥ "পেয়েছি উত্তম অস্ব উষ্ট্ দারি দারি। ''ইহারা আমার পক্ষে হবে উপকারী॥ ''এ চেয়ে অনেক ধন অমূল্য রতন। '' তোমরা এদেশ-থেকে করেছে হ্রণ॥ "লহ এক এক অস্থ এক এক জন। '' ক্রন্ত বেগে সিন্ধু-পারে কর পলায়ন॥ ''ধন আশে পুনঃ আর এস না এদেশে। " যদি এদ প্রতিফল পাবে তার শেষে॥" এত বলি অখ দিয়ে করিল বিদায়। দেলাম করিয়ে পদে পাঠান পলায়॥ র্জনী প্রভাজে হৈল বিপাশার ভারে ! রাজপুত্র স্থান পুজা করে তার নীরে॥ . হর হর বম বম শব্দ সুগড়ীর। অন্তরে বহন করে প্রভাত-সমীর 🖁 🔻 রান পরে কুধা-তৃষ্ণা করি নিবারণ। जूद्र किरिय मर्ट कदिन शमन

#### कर्मात्मदी ।

মধ্যাক্ষের উপযোগ আতিথ্যে নির্ভর। গৃহস্থ পরম যতেু করে সমাদর॥

একদা উরিণ্ট-পুরে করিল প্রবেশ। যথায় নিবদে ক্ষত্রি-কেশরী-বিশেষ॥ বলবন্ত সুধীর মাণিক-দেব রায়। বহু-জনাপ্রয়, খ্যাত রাজ-পুতনায়। <del>প্রেম্বিল</del>-কুলের পতি, কুলধমে রতি। প্রকৃতি প্রশান্ত, দার, সুনির্মাল মতি॥ স্তনামাত্র স্থারপুরে সাপুর আগতি। আনিতে তাঁহাকে যান সদল সংহতি॥ বাজিল মঙ্গল বাদা প্রতি যরে ঘরে॥ মঙ্গলাচরণ-গাত হয় বামা-স্বরে। -বাঁধিল বন্দনবার তিপোলিয়া দারে। রচিল রচনা তাহে নানা ফুলহারে॥ আরোপিল আমু-শাথা সুবর্ণ কলদে। मातिन পথের धूना वन्तरनत तरम॥ প্রতি গৃহশিখরে পতাকা বিরাজিত। সিতা**নিত লোহিত** হরিত নীল পীত॥ যেমনি ঢুকিল সাধু নগর ভিতরে। অমনি রমনীগণ পুক্প বৃষ্টি করে॥ व्यान-वाषाष्ट्रेया निया छेत्रिक-विश्वत्। সমাদরে স্থেহভরে লয়ে যান ছর। প্রণাম করিল লাধু ভাঁহার চরণে। মাণিক্য তোষেন তাঁরে প্রেম-আলিঙ্গনে ॥ শির-ভাগ লয়ে মুথ≢চুষ্ব অন্তরে। দেহ-গেহ-কুশল-জিজাসা পরস্করে॥

হায় কোখা দে দকল দবুল আচার! अशन अरमरन नारे रम मत <del>वैभिन</del>्त ॥ প্রেম, ভক্তি, স্নেহ্ আর শীলতা, ভবাতা। এজগতে এই সর প্রকৃত সভ্যতা॥ কর পরশন, আলিজন, সুসম্বাম। ইহাতেই হৃদয়ের মুভাব প্রকাশ॥ ইথে নাই প্রতাবার, নাই কিছু বার। এ সকল শিক্টাচার কি হেছু বিশ্য় 💽 🦼 একে বারে সদ্ভাব অভাব হিন্দুস্থানে। জাতি, জ্ঞাতি, বন্ধু বলি কে কাহারে মানে? সল্ল-পন-অভিমানে ফুলে উঠে কায়। কেবা ছোট কেবা বড় জানা নাহি যায়॥ " আর দবে ছোট হোক, আমি হই বড়" এই মিথ্যা মান-মদ্য পাৰে দকে॥ রসনা রদের স্থান অতি সুকোমল। নাহি তাহে অস্থি, একি সামান্য কৌশল? ঈশবের অভিপ্রেড ইহাতে প্রকাশ। অস্থিদ্ন্য জিহ্বা অতি-লালিত্য-নিবাস ॥ দে রদনা হইয়াছে পারুষ্য-আল্য। विदिद्यक्त अनुवर्की तमना ना इस् কিবা মিত্র, কিবা ভ্তা, বন্ধু, পরিজন। 🧠 ধন-দত্তে কিছুতেই না পায় ক্লেডন॥

#### कर्भारमती।

ड्डान-४८न धनी (यहे, त्म इय পांगन॥ শেই লোক, যে বকে অনর্থ অনর্গল। সেই প্রিয়, মিথ্যা-স্তবে তুষিতে যে পারে॥ সেই দুষ্ট, যেই তাহা দহিবারে হারে। (मन्ने घ्पा, (ध कटर वहन माना मिथा॥ দেই পুজা, যার মনে শচতা বিবিধা। যার আছে টাকা তার ভাগে পুজা কর॥ আতর গোলাবে তার কলেবর ভর। शांत नाहे है। का. ज्ञान-धरन (गरे धनी॥ ্ থেরে। যাহার বৃদ্ধি, বল, রতুম্বি। দে অতি অগ্রাহ্ন কিয়া তার উপরোধ ই তার ভাগ্যে কেবল ভর্মনা আরি ক্রে:ধ। ভার উক্তি ভার যুক্তি মলা যার নাই॥ मञ्जरत वरन वनी 'कि हू नाहि छाड़े। ্নাহি বিভু-বিষেষর, নাছি পাপ-পুণ্য॥ এজগতে মজা সার, আর সব শ্রা। রাজা রুজি বাৎ চিৎ, সেই মাত্র ধনা। ধ্যান, জ্ঞান, মিথ্যা সব্যে যা কয় অনা॥ ष्ट्रामी नारे, माधु नारे, नाहिक विदिक। धरन भारत (यह तफ़ (मह दफ़ अक॥ ख्वान प्रिथा। धर्म प्रिथा, ख्वानी त्कर नारे। ধর্মী কোথা? কেন দেয় ধর্মের দোহাই? এ জগৎ আহে গ্রন্ধ সুথের কারণ। যার আছে ধন তার কি আছে বার্ণ?

মজা কর নানা মত যাহা ইচ্ছা হয়।
জন্মেছ কেবল গুদ্ধ দুথের আশয়॥
অস্থি মাৎস যাহা চার, কর তাহা আগে।
এর পর আছে কিছু মনে নাহি লাগে॥
কিছু না দেখিতে পাই কারে বলে মন।
ভোজা পান চাই তনু পোষণ-কারণ॥
আর যাহা, ধন বিনা পূরণ কে করে।
সে মর্ম কি বৃলিবেক বিদ্যাবান নরে।
কিবা ছার গুন্ধার, হত্তের সন্ধান।
কিবা পর উপকার, হিত কার্যে দান॥

্হায় কেন হেন দশা হইল এদেশে। প্রাণ যায়, প্রাণ যাত, মর্মান্তিক ক্লেশে। দেকালের শিক্তাচার গিয়াছে দকল। মরিলে কেবল হয় হৃদয় বিকল।

এই রূপ আক্ষেপ করেন দ্বিজ্বর।
বিগত হইল নিশা দ্বিতীয় প্রহর॥
করিলা সঙ্গীত দ্বির জানিয়া সময়।
নিদুরে নিহারে রুজ নয়ন নিচয়॥
মুদিয়ে পলকদার সুসুপ্ত সকলে।
সুথদ স্বপন উঠে জ্দয়-কমলে॥
পর দিন প্রদোধে সকলে আসি বসে।
দ্বিজন্ম তোধেন কর্মা-দেবী কথা-রুসে॥

ইতি প্রথম দর্গ দমাপ্ত।

#### দ্বিতীয় সর্গ।

তান তান অপারপ, দুরদ দলিল-কূপ, कर्माप्तवी-कथा जात शत । ছিল পুথা পুরাকালে, অন্তঃপুর অন্তরালে, 🍍 থাকিত উদ্যান মনোহর॥ দিবা-অবসান-কালে, কুসুমিত ক্লেজ-কালে, থেলিত মতেত কুলবালা। তুলি ফুল চাফ় করে. পতির সোহাগ ভরে, কেছ বা রচিত গুদ্ধ মালা॥ (कह विम एक्स्म्ल, तिक्ष ह हुलिका जूल, লিখিত বিচিত্র চিত্র, পটে। নায়কের ভগ্ন প্রেষ্ট্র কবিতা রচিত কেছ, विनित्यं निकद्र-मिक्टि॥ নির্কারেতে কারে জল, সেইরপ অধিকল, नाशिका-नश्न-छिश्म वाद्र। উভয়ের এক দশা, তাই ব্কি মদালনা, नियंत-मधिधि (शत करत्।। কেহবা ললিত স্বার্থ প্রেম্য গান করে. তান ধরে আরে এক জন। এমনি মধুর ভাল, বিহল তালিয়ে গান, संद रहत कत्राय अवन ॥ क्ट कल किन करत, यम लाएक महाना অভিনৱ প্রফল্ল কমল

মুখ মাত্র দেখা যায়, কুঞ্চিত কবরী তায়, যেন মধুমন্ত ভূঙ্গ-দল॥ কেহ বা বাজায় বীণা: ভাষীনা ভাষীনা ধীনা, মৃদক্ষে দিভেছে কেই সঙ্গ। मूत्रम वोगात ध्वनि, অন্তবে উन्नाम गि স্থির-নেত্রে শুনিছে কুর**জ**॥ চাঁচর চিকুর থোলা, কেছ বা দোলায় দোলা, थाव:-थावो वकूलात **उ**ला। কেহ বা দুলিছে ভায়, মরি কিবা শোভা হায়, তড়িৎ চমকে মেঘ-দলে॥ বিনোদ-ব্যায়াম-ছলে, কপোলেতে বৃদ্ধ ফলে, আর্ক্তিম বিম্ব-ফল-জিনি। थन थन तरह शाम, ज्नरत्र उल्लाम-जाम, কক্ষণ বাজিছে রিণি কিনি॥ উড়িছে ওড়না বাস, পক্ষ প্রায় পরকাশ. পরী যেন হেলিছে অমূরে। (थरक (थरक करह किह, "धोरत मन्ने (मान (मह " -লাজ-ভরে অম্ব, সমূরে। अड्रेक्न मधीमत्न, विनाम विश्वात व्यन. প্रদোষেতে মাণিকা-দুহিতা। কর্মদেবা নাম তার, ৰূপে লক্ষ্যা-ভাবভার, চৌষটি কলার প্রকাশিতা॥ (वाष्मो क्रभनी बाना, नावना श्रुरकाद जीना,

অন্তা সরকা চারুশীলা।

তরুণ বসন্তু সম্ যৌবনের উপক্রম্ (मरङ **जात जानि** (म्या फिना ॥ এই ছিল মুকুলিত, মঞ্জীতে আকুলিত, ক্ৰে হল্যো ললিত ফলিত? मिन मिन कारू द्वाथा, सेय (यटडएक मिथा, পুৰ্মভাৱ হুটল ম্মাল্ড ॥ বয়স্থা দেথিয়া ভাষ, চিন্তিত মাণিকা রার, नानांक्ष असार अवसा। অবশেষে হল্যো স্থির, মন্ধেরের ভূপতির, নক্ন-মহিত মুদ্যুক্ত। অরণ্য-কমল নাম, কুলের জৌরবগুম, রাঠোর খ্রুদিন্ধ রাজস্থানৈ। कर्मारमवी-मह विका, (अध-शवादांश-निका, मिता-मिनी खाल **जात श्रा**ति॥ रख्या खन ममानात. मानिरकात नमानात, বশীভূত করিল সাধুরে। म्लवन नार्य गाइ. विविध-विद्याप-इत्हर প্রবাস করিল তার ছারে। নিজ্ঞানৰ নৰ থেলা, মল্ল-ড্মে হয় মেলা, কত লোক আদে দেখিবারে। অপরপ মলযুক, চমকিত সভা তক্ত্ निविधि विकास वादव वादव ॥ গদ্ধাযুদ্ধে গুণধাম, কিব্রা দেব বলরাম, কিবা ভীম কিবা মুর্য্যোধন ।

किया (मान-क्ड-मोक्सा, खशक्त मज़- निक्रा, লক্য-ভেদে নর্নারায়ণ॥ অদিচর্য্যা পরিপার্টী, বিপক্ষের অদি কাটি, তিল তিল ধরাতলে পাড়ে। এ मकल श्रुकत्व, (म्रायम श्रुतक्रीनव, বসি বস্ত্র-কাণ্ডারের আড়ে॥ (मत-(मनाभाकि श्वाय, नाधुत मुन्दत काय, তাহে বার বার-চ্ডামণি। সুনিমাত্র শৌর্যা সুথে, কার্ত্তি-কথা মুথে মুথে, य भागतम ভরিল ধরণী॥ রূপে ওণে অদিতীয়, এছাড়া নারীর প্রিয়, वन আর इत कान जन? ভুলিল মাণিক্য-সূতা, প্রেম-অনুরাগযুতা, সাধু বর প্রাপণ মনন॥ लाहे मिन कृतवान, कहिल मिन्नीताल, আপনার মন অভিলাষ। निव्िश्य नीव्यद्भ, ठाउकोव मरनाश्द्र, धन्न कन् द्वार्थ कि উन्नाम? कृत कृत पृथि कति, कठ कन प्रश्नुकती, গুঞ্জুরুণে থাকে বা বিরত? क्षिज-मर्ल চाक्स्यरत, मधुमय गान करत, পুকুশে করিয়ে মনোগত॥ करह "करी, इन करे, प्रानम शक्ति थै, मिबी-मन्ना अनव-कूभारा।

ע 🌋

"ষেই রূপ গোত্র রটে, দেরূপ প্রকৃতি বটে, মোহিল রে মানস আমার॥ "দেখি নাই হেন নীতি, দাগু হয়ে চোর-রীতি নাম সাধু কার্য্যকালে চোর। " স্থানিয়াছি কন্ত শত্ত যবনেরে করি হত্ত ব্লার-রুদে হয়েছে বিভোর॥ "হোক ভাহে নাই ক্ষতি, রাজপুত্র যোগ্য র नावी-िषठ- हुवी-धर्म किया ? "ধন-চোর ভারি ভুরী, রজনতি করে চুরী, এর চ্রা বিদামানে দিব।"॥ স্তানি বাক্য সুধাময়, কোন সহচরী কয়, " নেকি গো ঠাকুর-কন্যা দতি? '' **হয়েছে সম্বন্ধ তব**, রাচোরের ব**ংশোন্ড**ব, দেইত ভোমার ধর্মপতি॥ " অন্য-পুৰ্ব্য হবে বালা, জান না কন্তই জ্বালা कूल हर् कलाइत मान। " ধৈর্য্য ধর ধীরা ধীরে, মনেরে আনগো ফিলে হর পর-বর-অনুরাগ ॥" कर्मामि केन (द्वारिश, "कि आभाव कथा (मार्टि किया धर्मा व्यथमी विठात ! "अन्र पृष्ट्रा शतिगय, अनव नामाना नय, इंश नाय विनास मार्थ ॥ "ইচ্ছামত মুনিগণ, কত মত বিরচন,

করিকেন প্রাণপণ করি।

'যুগে যুগে নিরন্তর, কেন তবে মতান্তর, হয়ে থাকে কহ সহচরি ?

" এই বা কেমন বিধি, পরিণয় সুঝ-নিধি, জাত প্রেম-পয়োধি-মন্তনে।

"নাহি দেখা পরস্কার, পর-পরিচিত বর, উপজিবে প্রণয় কেমনে ?

"দৈবাধীন সংমালন, হয় বটে সংঘটন, কোধাও না নেলে এক বৃতি।

"কেবল ধমেরি ভয়ে, কুলনানা থাকে সয়ে, কিন্তু দুঃগোদহে ভার মতি॥

"রাহ্-সহ শশী-কলা, করে কভু কেলী-কলা, ভয়গুস্থ গুস্ত তাকৈ মূথে।

"মন্ত মাতলের প্রতি, কোমলা নলিনী সতী, দেহদানে নাহি থাকে সুথে॥

" এ কুবিধি যদি সার, এই রূপ ব্যবহার. অবাধে **বিভিত্**ত অবিরত।

"অন্যথা ইউলে পর, অন্যপূর্মা ঘর ঘর,

অসতী হুইত কত শত॥

''ভীয়াক-নন্দিনী গভী, চারু-মতি গুণবভী, রামারতু ক্লিন্মিনী রূপনী।

"শিতপালে বরিবার, সমৃদ্ধ হইল তাঁর, দৈত্যে দান সুধার কলসী॥

"কৃষ্ণাত তাঁর প্রাণ, কৃষ্ণ-ধ্যান কৃষ্ণজ্ঞান, কৃষ্ণে লিপি পাচান গোপনে। শ্রিবাহের দিনে হরি, আসি লয়ে যান হরি
দুয়ী-দল পরাভূত রবে॥

''শুন কই প্রাণ সই, তাঁর চেয়ে সতী কই, দাপরেতে ছিল বিদ্যমান।

" সাবিত্রী সীতার প্রায়, লোকে যাঁর যশ গ রুমা-রূপে যাহার সন্মান॥

"জীক্ষের এণ-গান্তনিয়ে হরিল জ্ঞান, মানদে বরিলা যদুলাল।

''নেরপ আমার প্রাণ, দাধুর দুয়শ গান, স্থান ভানে মৃথা বহুকাল॥

" আনে বরিয়াছি তার, লাদ্ধ ভয়ে বাপ । মুর্ম্ম কথা প্রকাশ না করি।

"পিছে রাচোরের সন্ধে কিছার অস্তভ ক সমুদ্ধ হয়েছে সহচরি॥

<sup>'</sup>' কুকিনুনীর কৃষ্ণপ্রতি, গুণ গুনে মজে মতি, ক্রুতি-পথে পুণুয় তাঁহার।

"আমি সুধু শুনি নাই, নয়নে দেখিছি ভাই রূপ-সিদ্ধু গুণের আখার॥

" যে হোক দে হোক সই, মনে ধুব জান কা সাধু মাত মম প্রাণপতি।

"**লাধু-ভিন্ন** অন্য জনে, পতি-শব্দে সম্বোধ√ না করিব আপনা অসভী ∦

"যদি অনো হয় স্বামী, জীবন তেজিব আছি. অধবা তেজিব নিকেতন। "বিজন-বিপিন-মাজে, ভূমিব যোগিনী-সাজে, ভববুত করি উদ্যাপন॥

" আত্মহিত যক্ত ভাঙ্গি, দাধুর মঙ্গল মাঙ্গি, দিবানিশী করিব যাপন।

" বনচারী মূগদল, না**হি** জানে কোন ছল, তারা হবে সহচর গণ॥

"অপার এ দুঃখ নদী, এর পারে নীতে যদি, ভোমাদের থাকে অভিলাষ ৷

'কিহিলাম সেইকপ, কহ গিলে যথা ভূপ, কহ গিলে জনমীর পাশ॥''

বলিতে বলিতে কথা, বাড়িল মনের বাঁথা, মূদ্যুগিতা, পতিতা ধরায়।

নির্থিয়ে স্থাগন, হইল চঞ্চল মন, ভয়াই হরিণা-দল প্রায়॥

কেছ গিয়ে সরোবরে, অগুলী বাঁধিয়ে করে, আনিয়ে সলিল সুশীতল।

ললাটে সিঞ্চন করে, কেহ ঘাণপথে ধরে, অভিনব বিকচ কমল॥

কেহ যত্ত্বে কোলে লয়, কেহ আনি কিসলয়, বীজন করিছে খনখন।

কেহ ডাকে উচ্চৈঃম্বরে, "উঠ স্থি, চল ঘরে, এ নহে তোমার সুশোভন॥"

দেথহ দৈবের কর্ম, ধেয় নছে ধাতাধর্ম, ধরণী তাঁহার নমস্থিলী।

ভাব বৃক্ষা বড় দায়, কেবা ভার ভত্ত্বপায়, मूद्रादश्य मूर्ख्य मकिन। নৰ-প্ৰেমানল-ভালা, দহে নাহি সহে বালা, মূচ্ছিতা হইলা উপবনে ! শাধু দেই দুসময়, আরোহণ করি হয়, जुरम वायू-(मवन-कातरन ॥ **पिवरमत অवमान, मन्त्राकान मृर्खिमान,** অস্ত্ৰত হ্ৰ দিন্দ্ৰি। ফ্লবন-সন্ধিান, শুনিলেন মতিমান, কামিনীর কলকণ্ঠ-ধ্বনি॥ চপল যুবক মন, হেরিবারে আকুঞ্চন, প্রাচীরের পাশে রাথে হয়। कर्द्ध छथा महासन, निर्णाहिक ध्रहासन. सर्वेषडा भृष्ठीतडा रुग्र ॥ गंत्रिभारणं नववाना, त्यन नकत्वत माना, ছেরিয়াছে পূর্ণ শশধরে । এ উহার মুখ চায়, কেহ করে হায় হায়, কেহ শিরে করাঘাত করে॥ निव्धि जनअ-मूछ, मग्रावरम प्रोङ्ड, ঘোড়া ভেজি উঠে সেই ক্লণে। शामेत्र लक्ष्म कति, याग्र ताग्र खताखति, यश्यक्रमार्टिको भन्नामत्व ॥ जूदक-दक्करक कय, " यथाश्वात नइ इय,

विषय घरेट वर्धात।"

হেখা পুষ্পা উপদনে, কুমার কুমারী সনে, যা হইল শুন সাবধানে ॥ দাধ্রে দহদা নির্থি তথা। কাহারে। মুথেতে না সরে কথা। স্থািত চকিত হইল ভারা। লাজেতে মুদিত নয়ন তারা॥ কেহ বা সঘনে ঘোমটা টানে ! কেহ অধোন্থে কটাক্ষ হানে॥ কেহ আধ আঁথি মেলিয়া চায় 1 আধ-ফোটা भील मलिमी श्राय ॥ (यन इ%मीमल मानम-माद्र। श्राप्ताय मगर्य निनाम करत् ॥ চত্রাননের বাহ্ন-বরে । महमा निর्धि (म मরোবরে ॥ সকলে যেমন নীর্ব হয় | (मत्र भ इहेन ननता हरा॥ দেথ দৈবাধীন সেই সে ক্ষণে \ (ठउन डेम्य इहेन घरन ॥ মাণিক্য-নন্দিনী মেলিল আঁথি ।

চাহিতে সাধুরে হেরিয়া তথা। আঁথি মূদি মনে কহিছে কথা। এ কি হল্যো মোরে স্বপন-যোগ।

যুগল চঞ্চল থাঞ্জন পাথী ॥

বিরাম বিরহ্ নিয়ত ভোগা 🕫

, নয়ন মূদিলে নির্থি যারে। প্রকাশিলে পুন নেহারি ভারে॥ অনজ-নন্দন অনজ-সম! ক্ষণেক না ছাড়ে মানদ মম॥ আহিথে)র ফল ফলিল ভাল | অতিথি হইল আমার কাল॥ আমার এদশা জানিত ঘদি। স্তুরিত তরিত এদুঃথ নদী॥ কিছার আমি বা কেন বা লবে? আমার কপালে এমন হবে ? তার রূপ গুণ সাগর-প্রায়! আমি কুদু নদী-স্বরূপ ভায়॥ কিন্তু ভটিনীর সাগর পতি ! সিম্বু বিনা নাহি তাহার গতি॥ এমন হবে কি আমার ভালে? नाथना मक्ल इत्व कि काला? কিছুতে প্রতীতি না হয় হেন। পর-করে আমি মরিব যেন॥ যাহারে মানস কড় না চায়। কেমনে জীবন সঁপিব তায়॥ কেমনে ভাহারে বলিব স্থামি? সাধু পরিশীত] বনিতা আমি॥ এত ভাবি অতি কাভর তরা। . নয়নের জলে ভাসায় ধরা 🛭

रिश्तय-वन्त्रन याहेल मृद्र । 'লাধু লাধু' নাম বদনে স্ফুরে॥ छनिए विश्वाग युवकदारक । বলে "আজি একি কানন মাজে॥ 省 👣 🎒 মহিলা ধরণী-তলে। " बर्गन-निर्दाध निम् 🚮- ছ ल ॥ " যেন ধরাসনে নলিনী-দাম। ''কেনবা লউছে আমার নাম? " আহা মরি এ কি মাধুরী-ছটা। " রুপের বাণিজ্য-বহিত্ত-ঘটা॥ " মাণিক-মণ্ডিত চরণ লাল। " অধরে জ্বলিছে মাণিক-মাল॥ '' দ্বিকর শোভিত লোহিত রাগে। " পদ্মরান শোভে যুনল ভানে॥ ''দশন বিমল-মুকুতা-পাঁতি। '' কিবা **সমূজ্ব**ল তাহার **ভা**তি॥ " অধ্ব-অন্তবে শোভিত কিবা। " মৃদু মৃদু মৃক্ত মোতির ডিবা॥ '' নিমালিত আঁথি রতন নীল। '' भनरकत्र हारत्र मियास्ट थीन ॥ "চাঁচর চিকুর চামর জাল। ''চরণ অবধি শোভিছে ভাল 🏽 ু" তবুর সুরভি অগুরু-প্রায়। " प्रथुल प्रधूत प्रान्त शांत्र॥

" বাহুতে গজেন্দ্র দশন বিভা। " চন্দ্রকান্ত মণি হাসির নিভা॥ "প্রবালের ছড়ী অঙ্গুলী-দলে। "কষ্র কলনা নির্থি গলে॥ " कनक बढ़गो छक़्गी हाक्स् 🗦 " কোন থাকে দৃশ্য না হয় দারু ॥ " অপৰূপ এই প্ৰমদা ভৱী "যৌবন-সাগরে লোকন করি॥ " ইহার ধনিক বণিক কট। " কছ না আমায় যতেক সই॥ " বিভুম ভুমীতে পতিত ভরী। " নাবিক-বিহীনা বিচার করি॥" ন্ত্ৰনি লাজ তেজি জনেক আলী ! কহিছে বচন মধুর-ডালী II "ও হে সুরসিক পথিক-বর! '' এ ভরীর কথা প্রবণ কর।। '' নানাবিধ নিধি লইয়ে ভরা। " তেজি বাল্য-লীলা ভটিনী থরা॥ "প্রবেশে যৌবন-জলধি-জলে। "পুৰমেই তাহে অস্তত ফলে 🛭 " ठिख नाम-धन्न नाविक-वन्न। '' वह विश्व छर्ग निश्रून-छत् ॥ "ধৈষ্য হালী করে ধরি কলিয়া '' সুস্থির হৃদয়ে ছিল বলিয়া॥

" এমন সময় ভস্কুর এক 🛚 " সাধুর স্বরূপ ধরিয়া ভেক॥ "নাবিকেরে বেঁধে গিয়াছে লয়ে। "ভাসিছে তরণী অধিরা হয়ে॥ "সাধুনাম ধরে, প্রকৃতি চুরি ! " भ्रां भप्भारत श्वरत श्वरत श्रुति ? "তুমি কি তাহারে জান হে ধার? "কিঞ্চিৎ করনা উপায় স্থির॥ "অথবা নাবিক-বিজ্ঞান জান ! "বিপথ-বহিত কুলেতে আন॥ "তব প্রতি দিয়ে এগুরু ভার | "আমাদের হেথা কি কাজ আর ॥" ষেয়ন বচন অমনি কায। অবাক্ হইল যুবক রাজ॥ গৃহপ্রতি দবে করিল গতি। ন্পুরের ম্বরে জাগিল সতী। चाथिविथि उथा উठिल विम । রাহ-মুথ-মুক্ত যেমন শশি॥ (मिथिएं मिन्नी मकरन धारा। निकटि माँ पार्य नात्र न्वाय ॥ ্রুনাগরে নির্থি শীহরে হিয়া। गर्वतिम्दन श्रुटवटन शिया॥ নির্ধি নায়ক যুড়িয়ে পাণি। . কহিছে মধুর রসাল বাণী।।

"কোথা যাও মধুরা বিধ্রা হয়ে ভুমে? ''শ্রম-জল ললাটে উদয় পরিশ্রমে॥ "শিশির শীকরে সিক্ত সর্যাজ প্রায়। " জলে স্থলে আজ এ কি শোভা হায় হায় ''উভয়ের এক দশা প্রদোষ-সময়ে। ''হের হের হরিণাক্তি সরসী-ছদকে॥ "হের তোমা নির্থিতে কুদুম-দকলে। " একে একে নয়ন মেলিল জলে স্থলে॥ '' আই দেথ নির্থিতে তব মূথ-শশি। " কুমুদ ছোমটা খুলে সলিলেপ্তেয়সি॥ " অই দেশ মলিকা যুথিকা থরে ধরে। "হাসিভেছে ভাসিতেছে সুথের সাগরে॥ " আই उप प्रमुप्तम् प्रमायक वरह। " মৃদুস্বরে মনের উল্লাপ বুঝি কছে॥ " অথবা সুরভি তব হরণ-কারণ। "চোর**–প্রা**য় চুপি চুপি চলিছে পবন॥ "এ সকলে পরিহরি মাইবে কোথায়। "উচিত না হয় তব, শোভা নাহি পায়॥ "যার প্রসন্নতা-লাভে লুব্ধ এত জন! " প্রত্যাহার তার পক্ষে না হয় শেভিন। "কিঞ্চিৎ বিশ্রাম কর বলি এই স্থলে 🚣 " তোমার দেবায় তৃপ্ত হউক সকলে 🛙 " ब्याइ खेन हांक्रभीत्म प्रप्न निरंतरन 🏗 " তर প্রদন্ত।-পূত্র আর এক জন॥

'বৌরভা বনিতা তার ছিল এত কাল। " সেই রস তার কাছে পরম রসাল।। "সেই মাত্র বরণীয়া শরণীয়া তার। " কিবা দিবা বিভাবরী বিনোদ বিহার॥ " আছ এই শুভক্ষণে সেভাব বিগত! ''নবভাব আবিভাব, সুখী তাহে কত॥ '' ভোমারে নির্থি ধনা মানিলেক মনে। "বীরতার প্রেমডোর ছিন্ন এইক্ষনে॥ '' এজগতে যতকিছু আছে মধুরতা। " তুমি তার সারময়ী ওহে স্বর্ণতা॥ '' সে মাধুরী সুধা তর নয়নে অশেষ। "কটাক্ষে তাহার হৃদে করিল প্রবেশ 🛭 ''তেমন অমিয় নহে কভু আস্বাদিত। " একেবারে মানস হইল উন্নাদিত॥ '' মাভাইয়ে কোথা যাও, কেমন এ দ্যা। ''কর ছোর নিবারণ ভূপতি-তনয়া॥'' ন্তনি কথা নমুম্থী অধিক লব্জিতা। বিবাহ-বাসরে যথা ব্যাকসব্জিতা 🎚 নহচরীগণ-মাজে করিল 📆 য়াণ। শোন-ভরে ভীতা কপোতিনীর সমান # শাবাশ্ हरूता थोता. भावाम् हारूती ! गावाम् ममग्र-छव, गावाम् प्राधुती ! मानम-माकाद्व (श्रम निर्वाद केशला ) कि नांधा सग्रस-भाष প्रवाह निकास ॥ 10 **2** 

লক্ষা তার স্বার ক্লব করিয়াছে ভটে। ফিরে যায় প্রেম-ল্যেভ মনের নিকটে॥ লকাইতে কাজভয়ে নয়নের ছালা। তাই বুঝি অধোম্থে রহে কুলবালা? হায়রে বয়স্সন্ধি সুথের সময়! আর কি সময় আছে হেন রসময় ? লব্দানহ **প্রণ**য়ের হয় হাতাহাতী। যথা প্রাতে ভমোদহ তপনের ভাতি॥ ক্রমে যত তেজ বৃদ্ধি হয় ভানু করে। ভতই তিমির-চয় বিগত অন্তরে॥ পরিশেষ পরিপূর্ণ প্রভার বিজয়। ি**দেই রপ ল**জ্জানতে প্রেমের উদয়॥় কলে যথা তিমির মিহির ছাড়া নয়। লক্তা-সহ প্রণয়ের সেই ভাব হয়॥ , উভয়ের রাজধানী সভীর হৃদয়। হায়রে বয়স্-সৃদ্ধি সুথের সময়! न्यद्रिलः तम मूथप्रग्न द्वहुमद्ग धोवन। নেচে উঠে যুবাপ্রায় প্রাচীনের মন ॥ ক্ষণেক জড়িয়া কুনতার দশা। क्विता खोरनमत्म इस मनानमा ॥ কিন্তু সে অসার সুথ স্থপনের প্রায়। **टिजनोग्न रक्वन योजना दृक्ति शाग्न ॥** হায় বিভারনা ষেন নীহারের হার! বৈথিতে বৈথিতে ভানু-কির্তে সংহার

ছেথা তান স্মাচার সঙ্গিনী-সদনে। कर्म्यापती माँ पाइटिल विनव वम्यन ॥ সাধু সম্বোধনে কহে এক সহচরী। শারিকা ভাহার নাম প্রণল্য সুন্দরী॥ "কেমন এ বার ধর্ম ব্কিতে না পারি। "কোথা শৌর্যা? শূর হয়ে চৌর্যা অধিকারী। " অবলা দর্লা বালা চাকুর-দুহিতা। "চিত চুরা করিলে হে, করিলে মোহিতা। "পিছে একি চনৎকার বীরের লক্ষণ। "কি সাহসে করিলে হে প্রাচীর লম্বন? " कूनवाना-अर्पाप-कानन-इन अहै। ''ইথে যে পুরুষ আদে, অবিনয়ী দেই ॥ ''ভূপজার ভাষান্তর করিলে লোকন। " এ পাপের প্রায়**শ্চিত্ত করহ শ্ল**বণ॥ " এইক্ষণে ভূপতি সমীপে কর গতি। " আতিথা-দক্ষিণা চাও করিয়া বিনতি॥ '' এমন দক্ষিণা আরু কে পায় কোথায়? "কুবেরের সর্বাছে সমতা নাহি পায়॥ ''যাও যাও যুবরাজ, তাজ এ সমাজ। "তাজ লাজ, যদি চাও সাধিতে স্বকায॥" " সাধু কন, " বীর-ধর্ম আছে কি না আছে। " রজনী-প্রভাতে সবে জানিবে হে পাছে। " তানি নাই হেন রীতি অভি🍇 যে জন। " প্রার্থনা করিয়া করে দক্ষিণা গ্রহণ॥"

R 3

"গৃহী যেই করে সেই দক্ষিণা প্রদান। " সর্বাতি এই, বেদের বিধান ॥ " তোমাদের এদেশে গঠল বিপরীত। " প্রার্থনা বিরহে নছে দক্ষিণা বিহিত॥ '' পতঙ্গ মাতন্ব মীন কুরন্ধ প্রভৃতি। ''রূপ গদ্ধ রূস রূবে প্রমন্ত প্রকৃতি॥ " কুরঙ্গ স্বরূপ আমি ভুমি সুথবনে। '' সহসা বিনোদ–ধ্বনি প্রবেশ শ্রবণ॥ "মোহিত করিল মন মনোহর স্বরে। "মন্ত হয়ে আইলাম কুঞ্জের ভিতরে॥ " সুধান্বরে ছিল সুধু প্রমন্ত ভাবন। " ছেরি অপরপ রূপ মাতিল নয়ন॥ " यथा नद्रनीद जल कङ्ग्रन-मध्य । "পদাৰন-প্ৰকল্পন ঘন ঘন হয়॥ '' লাভি আঁথি মাভিল, মাভিল ভাছে মন। " করিলাম ভিক্স-প্রায় প্রাচীর-লম্বুন॥ " দাতা-ভারে দাঁড়াইরা দান দীর্ঘাশয়। "ভিক্লা করি আশা যদি পূর্ণ নাহি হয়। "ভবে আর কি কাষ এস্থানে অবস্থান ? " বিদ্ধ অতিথি করে ষম্বানে প্রস্থান॥" এতবলি করে সাধু পূর্ত্তপথে গতি। ় নির্ধি নৃপতি-বাুলা সচঞ্লা অভি॥ मातिकादा मसाधित करहम वहन। " आला जानि कि कब्रिनि कर्मा अक्षम । " অবিনয়ে নাখের করিলি ভাবান্তর। " হায় হায় ভাবনায় অস্থ্র অন্তর॥ " অঙ্রিত প্রেম-তরু এমন সময়। "আঘাত করিল প্রভক্তন অবিনয় 🛚 "অস্কুরে আখাত পেরে বুকি হয় নাশ। "কি হবে নাহিক আর আশ্বাদে বিশ্বাস ॥" মদাললা কছে '' ওন চাকুর-কুমারি। " কুমারের এক বাক্যে আশা আছে ভারি॥ "কহিলেন বীর বৃত্তি-আছে কি না আছে। " রজনী-প্রভাতে সবে জানিবে হে পাছে॥ " ত্রনিয়াছি কল্য-প্রাতে হবে ঘটাছোর। " দেখাবেন নানা শিক্ষা তব মনোচোর। ''কয় দিন মহাধুম হয় এ নগরে। " সুসজ্জিত রঙ্গ-ভূমি হত্যেছে প্রান্তরে॥ "দেশ দেশ থেকে কত আসিতেছে বীর। '' বনাশ বিপাশা কিবা নর্মদার তার॥ '' দবে বলে এই কথা, রঙ্গভূমি-স্থান। " জয়লব্ধ হবে সাধ শিক্ষার কৌশলে।। '' ধনিরাছি, অন্তঃপুরে আছে নিমন্ত্রণ। ''মহিষী হাবেন তথা সহ স্বীয়গণ॥

"বিজয় লভিলে বীর ওগো বীর বালা। "লভা নাক্ষি করি তাঁরে দিও বর্মালা।

'' সাধু প্রতি যদি তব একান্ত হৃদয়। ''সেই স্থলে সেভাব প্রকাশ যোগ্য হয়' "ইংগ অসদৃশ কিছু না হবে ঘটন।
"বারত্বের পুরস্কার মাল্য-সমর্পণ॥"
ন্তান "ভাল ভাল" বলি সবে দিল সায়।
হিলিলেন চারুশীলা বিশ্রাম-শালায়।।
"হে পথিক! বিভাবরী অর্দ্ধানত হয়।
"হইয়াছে বিশ্রামের মুখদ সময়।।"
এত বলি মন্ত্র পরিহরে কবিবর।
শোত্রণণ নিদ্রাদেবা পুজায় ভৎপর।।
ইতি দ্বিভার সর্বা।

## ় তৃতীয় সর্গ।

অপুর্ক হইল শোভা প্রভাত-সময়।
বলীচক্রে উপনীত বহু লোক চয়।
কেহ অথে কেহ গজে কেহ র্থোপরে।
সম্বিক অবস্থিত চরণ নির্ভরে।
একধারে মঞ্চোপরে পুরনারীগণ।
জিনিয়ে কুসুম-কুস্ত অপূর্ক শোভন।
বিকচ-কমল-দল-গর্ক থর্ক করি।
হাস্য মুথে সুথে বসি সকল সুন্দরী।
বিকশিত ইন্দীবর ন্যনে ন্যনে।
মদ-ভরে চল চল প্রভাত-প্রনে।
বাড়াইতে ভার রাগ কি কায কজ্জলে।
অভিমানে দলিত অঞ্জন ভাইগুলো।

বাঁধুলী ফুটিছে কত অধরে অধরে। তামূলের সাধ্য তাহে রক্তিমা বিভরে? কোথা বা প্রফুল ম্থ মন্দ হাসামান। ত্তচিমিত নিকশিত কিপ্তক সমান। কত কুন্দ কৃটজ-কোরক-বিমোহন। 🤲 বিমল দশন কৃতি কৃতির দশন। কাহারো কপোল-প্রভা জিনি নব **জবা।** ঋর্ঘলোভে ল্ব্ল মনেভিব মনোভবা। कक्षुक-कम्रान एक क्षुक-महाक्र । হারত পল্লবে বন্ধ পা**ল্কলি-বাূহ।** কিবা অঙ্গ আভামরি কি দৌরভ তার! কে আর গৌরব করে কেয়ার পাতার? নিরমল সে আভায় আঁথি মনোভায়। চেলিকার কিবা সাধ্য ঢেকে রাথে তায়। नधू नीवभद्र कजू हेन्द्र शास्त्र छोका। জলদে করিয়ে ভেদ অবতীর্ণ রাকা। সবে অবন্তপ্ৰতা কিবা শোভা তায়। नोत्रधित नोलजल रेमूहास्थार। शवन-शिल्लारन (मारन वमत्तर काम) यमप्रम हनहन निव्यन हैं। নানা ভঙ্গিয়তা যত অনঙ্গ-ভঙ্গিণী। রহ্সা-কৌতুক-কলা-রসেতে রঙ্গিণী। কেহ বেণীহম্ভা, কেহ ব্যন্তনী ছেলায়। কেহ শিল্পত মন্ত বিনোদ খেলায় ৷

কোন ধারা অতি-ধারা বিরলে বদিয়া।
একদৃষ্টে দেখে সভা, শিরে হাত দিরা।
আদিবে নায়কবর আছে সমাচার।
ধিয়ায় চাতকা সম আগমন তার।
ধিয়ায় চাতকা সম আগমন তার।
বিজড়িত তাহে চারু কদরীর ভার।
থিয়-চিতে বাড়াইতে উৎসাহ লহরী।
আনিয়াছে ফুল-হার যত্নে শিরে ধরি।
বলীচকে বারের বীরত্ব-প্রদর্শন।
করিবে নায়ক-শিরে কুসুম-বর্ষণ।

অন্যথারে বার দিয়ে উরিণ্ট-ঈখর।
দলে বলে উপবিষ্ট থেন পুরন্দর।
কুলদের ভানুর গরিমা অভিজ্ঞান।
উঠেছে কনক চাঞ্চী তপন সমান।
ধরেছে আড়ানী যার 'কিরণীয়া' নাম।
পুভাত-কিরণে ছলে কত রত্ন-দাম।
ব্যঙ্গনী হলায় পাশে কোন জন্দর।
কবি কহে কবিতা বান্যয়ে বহুতর।
কন্দী করে মুতিবাদ বংশ বাথানিকা।
বিনোদক কহে কথা সময় জানিয়া।
ভাঁতে করে ভাঁড়ামী বাক্যের কত ছটা।
ধেকে থাকে জেঁকে উঠে হাসারস-ঘটা।
বিসিয়াছে মন্ত্রিগ নিজ নিজ স্থানে।
গায়ীর সুধার ভাব চিত্ত একতানে।

প্রদন্ন প্রকৃষ্ট নেত্র মৃদু হাদ।পর । লোলিত খাঞ্চর ভার বক্ষের উপর । উन्न विश्रुल (भोली, वीवरवीली कारन। ধ্যান দেখি বোধ হয় পরিণত জ্ঞানে 🛊 আরু আরু পারিবদ বসিয়া সকলে। তার অন্তে পদাতিক থাড়া দলে দলে॥ আসা অসি এপ্তর পরস্ত ভল্ল শ্ল। শির টেড়া তাহে বেড়া লোহিত দুক্ল। অদরে দাঁ। ড়াযে শত মন্ত করিবর। শুড় নাড়ে মদ কাড়ে করে থোর স্বর। মহাতেজী ভাজী বাজী, দাজি নানা দাজে। ঘন ঘন চে্ষা রব করে সভামাজে। থাকি থাকি মারে কাঁকি কর্ণ করি খাড়া। যাড় ভুলে উচ্চে ফুলে ব্কে দিয়ে চাড়া। মৃগয়া আথেট রণে অতি হাইট কায়। স্থির ভাবে থাকিতে ক্ষণেক নাহি চায়। কুজ পৃষ্ঠ ন্যজ দেহ সারি ২ উট। চালেকের ইঙ্গিত মাত্রেই দেয় ছুট। क्लाकांद्र क्रथ वरहे, छत्न नाहे जुटि। দূরগতি তুলনায় নাহি যার যুটি। প্রচন্ত প্রতন্ত পয়েরিছীন প্রদেশ। ভাৰতেজে কেণু কেতা ক্যাণ বিশেষ। বহে তাহে ছোর বায় কালান্তের কাল। জগতে পদাৰ্থ হেন কি আছে ভয়াল ?

পর্শনে তনুত্তলে ইন্ধন সমান।" ক্ষণমাত্রে ওঠারত ছট্ফট্ প্রাণ। কোথায় 'সিরজে।' কোথা <sup>'</sup>লূহ' নামধর। মহাতেকে মরুদেশ শাসনে তৎপর। হার যেই ভূতপ্রেষ্ঠ জনতের প্রাণ। যে হয় সুরভি ঘুল প্রদান-নিদান। কীবর্গণ অরজ্বালা প্রান্তি ক্লান্তি হর। মলয় অচলে যেই রহে নিরন্তর। তার পুনঃ একি ভাব, স্মরণেতে ভয়। পরশনে জ্ঞান সহ প্রাণের বিলয়। হেন ভাম-প্রভক্তন প্রভাব প্রদেশ। ছায়া জল; ভূণ দল, নাহি মাত লেশ। মার্ভ-মযূথ-মানা মৃত্যুর কিন্ধরী। भाराविमी भरोहिका यात महहती। হেন দেশে অনাগাদে ভুমনে নিপুন। পর মধ্যে উট তুলা করে আছে গুণ ? निदाहादा निद्रमम शघरन निर्वम। जिन मिन नित्र भू छे भारिन नाहि क्रिन । অতি দুরে প্রান্তরের থাকে অলাশয়। ⊮**নেইদিনে ধা**য় যদি পান ইচ্ছা **হয়।** नारवत निवास चुत्र छेरयुत निकरणे। मृद्ध (चटक वाहिओं है निश्नाल श्रक है। আর এক অপুজান অতি চমৎকার। ना इहें ए जिन्नुकान श्रवाह है हात ।

জানিয়া আহ্বত তার মুদিয়া নয়ন
চরণ প্রশারি করে ধরার শয়ন ॥
যতক্ষণ প্রভক্ষন শান্ত নাহি হয়।
ততক্ষণ স্তর্মভাবে ধরালনে রয়॥
বহিষা যাইলে বায়ু জানিয়া সময়।
পূজমত প্রানে প্রস্তুত পুনঃ হয়॥
হায় হেন কুংসিত আকারে এই মত!
অপ্রতিম অসাম সদ্প্রণ থাকে কত!

এইরপ কতরূপ করি আড়ম্বর | বার দিয়ে ব**লিয়াছে ওীরিট ঈশর**॥ করিপুটে নৌত্র বাজিছে সুধানয়। গুড়ু গুড় গর জিড নকোরণ-নিচয়॥ সানায়ের কিবা প্রান, কিবা ভান ভায় ! করিছে ভৈরবী টোড়ী প্রভৃতি আদায় ! স্থার উদাস করে মধুর আলাপে। সন্থান শোকাত্ত ক্ষান্ত ক্ষণেক বিলাপে॥ বাজিছে তাহার সাজ, বঁলে সাতে সাতে, বিরামের ছেদ-ভেদ, মন মাতে ভাতে॥ অনাধারে জনতার নাহি পরিশেষ। मानवी-काठेवी श्राय, नाहि भूना लाभ ॥ মুশোভিত শিরস্ত্রাণ প্রকার প্রকার | উর্দ্বথেকে দৃষ্ট হয় যেন একাকার॥ মাকে মাকে রুখচয় পতাকা ভূষিত ! চ্ছোপরি রতন বলরী বিল্লিত। F

লোহিত উষ্ণীয় শিরে, অঙ্গে অঙ্গরাথা। দুদিলে উড়ানী প্রান্ত, যেন দুই পাথা॥ বসিয়াছে র্থীগণ, গোঁফে দিয়ে চাড়া। व्यार्ग भारम जात्र्मी, जात्र्म नरत्र था 🤄 🖁 মদক মোদক লয়ে ফেরে ফিরি ঘুরি। ্বরফী, অমৃতী, পেড়া, ঘিওর, কচুরী॥ কৌড়িররূপ রেউড়া পিউড়া সুন্দর। শकतीत काँक (यन (भाट सुरत सुत्। (थलमा विद्युक्त नार्य विविध (थलमा। কুট্যিনা সমাজে করিছে আনাগণা। মাটিতে বৃচিত মল্ল, মল্ল-সহ থেলে! সমাদরে ক্রয় করে ফালিয়ের ছেলে॥ কোথা বা আদিক-সহ আদিকে লড়াই **ভঙ্কিদেথে** বোপ হয়, করিছে বড়াই॥ (यरमर्ग (यक्ष भ दृष्टि, (मडे क्रभ प्रिडि। সেই রূপ ক্রীড়ার্স, সেই রূপ রভি॥ শৈশবছইভে সেই দিনে চিত ধায়। অনারদ: অনারপ ক্রীড়া, নাহি চায় 🛊 যথা, বাঙ্গালার লোক নহেক সাহসী। নারীপ্রিয় কেলীকলা, কৌতুক বিলাসী # শিল্পর পুত্রে দেখ আভাদ তাহার। কামকলা, ছলা, তাহে প্রতাক্ষ প্রচার ! পুৰুলে পুৰুলে বিয়া, বহু, বহু কেলী! নিভান্ত কৈশোরে যত বাল বালা মেলি #

কিরপে পৌরুশ্বপথে ঘাইবে বালক।
তামাক থাকুরা বুড়া, প্রিয় থেলনক!
পশ্চিমের প্রজাপ্তপ্ত পুরুষার্থ চায়।
সেই মত দেথহ শিত্তর থেলনায়॥

ধারে ধারে বদিয়াছে শক্তের আপণ। हाल हाल मूनब्बिड नाना श्रह्तन॥ युवाशन क्रम करत कति निर्खाहन। (कर् लग्न (लीर-जाल-भग्न मन्द्र ॥ কেহ্ লয় শিয়োহী, ভূজালী ভয়স্কর। চক্মকৃ, ককমক্, করে নিরন্তর ॥ কেহ লয় ক্ষিপু গাঁড়া অতি ধরতর। কেছ লয় এপ্রার পঞ্জর বিদ্ধকর।। কেহ লয় কৃষ্ণাজিন পটুকা ক**বচ।** এড্গী চমে রচ। ঢাল বেচিছে **স্থপচ॥** তদুপরে শোভে স্বর্ণন। রতনে রচিত কত ছবি মনোরম ॥ শার্দ্দের কৃত্তি বিনির্মিত উপানই। দংশিলে দশন-ভুষ্ট ভীষণ বরাছ ॥ আর আর কত দুবা, কত লাব নাম। ু রাজপুত-প্রিয় অন্ত্র শূলপী বল্লাম 🌬 🧸 এই মত কত মত যুদ্ধ-আয়োজন | রাজস্থানে, ক্রেয় করে যত যুবা-জন॥ আলিয়াছে বলীচুক্তে ক্রেথিতে তামানাধ मूर्थ मूर्थ, बीइरजुइ बीब्शान महाया॥

সাধুর চরিত্র-কথা কছে কত জনে। क्ट् वरण (इन वीव, ना पिथि नश्रन । আসিয়াছে দলে দলে কত রাজপুত। বার-মদে মাত্যালা, নানা-ওণ যুত।। কারবারে সাধু-মনে বলের পরীকা। দেখাটবে নিজ নিজ সাম্য্রিক দীহল ॥ দ্রতর দেশথেকে আনিয়াছে নবে। कारदाञ्च कति जुद्रस्य स्तामस्य ॥ থীকানের, আজমের, মের্ডার ! शाहातही, यमुबदी, जाह मीत्राह ॥ व्याधनिक प्रारष्ट्रो, श्राहोन प्रवाह (नन । জন্মে যাহে বুজুশিলা নিশেষ সিশেষ। क्ष्माष, त्कतनो, भिवात भिक्तामा। ঢোলপুর, করপুর, যোধপুর, আদি॥ মাণিকা ভোষেন সংব যোগ্য সমাদরে। বিন্মুমাত স্থান নাই ঔরিণ্ট-নগরে॥ পড়িয়াছে ভেরা ভাঙা যেথানে দেখানে গীত, বাদ্য মহোলাদ লারজের তানে॥ আসিয়াছে 🗫ত মল্ল, কত লব নাম। মালসাট, কন্তনাট, করে অস্ক যাম 🛚 💣 वोद्रश्री करिंउ है शास दक्ष-दक्। ক্লতৰু, কিবা স্থাণ, কিবা মন্ত গৰা মুলপদ্মাকার আমি ইয়ৎ লোহিত। অক্তণ উদয়-কালে যেরপ শোভিত ৷

এক ভাগ লাল, অন্য ভাগ খেতোজ্বল। শারদী উষায় কিবা শোভা মিরমল ! চ্টাপট্ পট্পট্ বাহুর আম্ফোটে। কেঁপে উচে বসুমন্ত্র পতনের চোটে॥ ত্রায়ে মৃত্তর মারে বক্তের উপর। मिथित्न छोद्भत इस मङ्ग खलुत ॥ এই রূপ মল্লনৰ আদিয়াছে দেজে। লাছে থাড়া, শির টেড়া, বিক্রমের ভেনে। जानियाक मल-(गाका निज निज पता বন্বন্ভাঁজে ভল্ভীয়া ভ্জৰলে ॥ ঘুরায়ে ছুড়িয়ে ফেলে অম্বর উপরে। চকিতে লখিতে পুনঃ লুফে লয় করে॥ আসিয়াছে শর-যোক। বিচিত্র সক্ষায়ী। হেন ভদ্নী যেন অতি শৌর্ষ্য-রসপায়ী॥ দৰে সব্যদাটা সম সন্ধানে নিপুন। উভয় কম্বরে প্রলম্বিত দুই তৃণ 🛭 साना करल विव्किष्ठ भरत्व कनक। কোন শরে যেন অর্জ-চল্লের বলক। কোন শর-মুখ যেন ভুজন্ধ-রদনা। গরলে মণ্ডিত তবু বিষম ভীষণা॥ কোন শর-মূথ, হর-তিশ্ল-আকার। কোন শর, ইন্দের আয়্ধ-অবভার 🛚 মাহিষ বিষাণে বিনিমিত ধনুচয়। ন্ত্রণ ভিন্ন সামা নয়॥ **#** 3

আসিহাছে আসিক, আসন তুরঙ্গনে।
লক্ষাভুম, কোন কালে, নহে কোন ক্রে॥
প্রমথেশ-প্রমদা পুজিত প্রহরণ।
দিনকর-দূতি প্রায় অহি সুশোভন॥
যত এত্রী পৃষ্ঠে, কুলে এত্থ স্ম চাল।
অভেদা, অচ্ছেদা, সেই বিষম কর।ল।

বারবৃদ্দ দাঁড়াইল, নিজ নিজ গণে।
অপুর্ব্ব হইল শোড়া, পরাক্যা দদনে॥
শেই স্থানে, অনোর গমনে বিপি নাই।
প্রভূ-পাশে, পঙ্গণ শ প্রভিত দদাই॥
এমন সময়ে দুই রগ-বাদ্যকর।
করে করি দুই তুরী হৈল অগুসর।
কেত্রেকর্ম-বিধানে সঙ্কেত করে ভায়।
অভিদূরে তুরীর নিনাদ ক্রত ধায়॥
কোলাহল কল্লোল হইল তাহে স্থির।
তানি শব্দ স্তব্ধ প্রায় দকল শরীর॥
হয় চয় তানে তাহা, কর্ণ করি থাড়া।
আর কি স্থািত থাকে, পেলে পরে দাড়
প্রথমত মল্লযুক্ক প্রদর্শিত হয়।
মল্ল-ভূমে দুই বীর হক্কল উদয়॥

\* ইয়ুরোপীয় নাইট-নামধের বীর-পুরুসদিগের দেঁব চর্য্যায় যেরপ ভদু সন্তানেরা বীর-বিহিত কার্য্যাদির শিল তেন, ভারতবর্ষে রাজনা কুলেও এই রূপ প্রথা ছিল। ি বস্থায় বিরাট স্থানেরগ্রেপ্রায়ের বিখ্যাত হইতেন। ্রিক দিনে সাধু, অন্য দিনে যোধা-এল। গর্জিয়ে এলো মেন কেশরী-যুগল॥

## गान याँ था।

্ঠকে তাল, আঁথি লাল, কি করাল মূর্তি। মহাকায়, হরি-প্রায়; বৈন পার স্ফুর্তি॥ हत्ला याय, अम्-याय, वमुशांस क्या। কভ্ষার, ঠার ঠায়, মেরে যায় করা॥ টিট্কার, চীৎকার, শীৎকার, জোপে। গর গর, কলেবর, পরস্পর-বোধে । জড়াজড়ি, গড়াগড়ি, পড়াপড়ি কেত্রে। न्षेशूहे, (मश ছूहे, कानकृष्टे (मख ॥ মংতামাতী, হাতাহাতী, যেন হাতী, एकु। করে জোর, মহা শোর, হয় ঘোর স্লন। यथानक, कि चाइक, हतन इक शए। নাছি তঞ্চ, ছেরি মঞ্চ, যুক্তে পঞ্চ দত্তে। নাহি ছেদ, নাহি থেদ, ঘন স্বেদ অঙ্গ। मूरे भान, (यन क**्रा**, नाहि डान छड़। হাঁদ ফাঁদ, বহে 📜 , তুনি তাদ লাগে। पूरे जन, श्रायन, बाह- वन-वारा। पूजनाय. अहे ठाय, अ छेराय जिल्छ। করে জারি, ভুরি জারা, মেয়ে চারি ভিতে। কত রোক, বড় বেঁকে, দেখে লোক, বৃদ্দে।

সবে চায়, হয় সায়, কেহ, কায় নিদে॥

এই মত, নানা মত, প্রতি হত, কালে।

সাপু ধরি, নিজ অরি, ধরা পরি টালে॥

যেন কড়ে, নড়ে চড়ে, জোরে পড়ে শাল।

তার প্রায়, লম্বায়, পড়ো যায় মাল।

যোধাশুর, দপ চুর, যত ভুর, ভঙ্গ।

হরি হরি! ধ্বনি করি, সভা ভরি রঙ্গ॥

হরুহার, চীৎকার, বার বার লক্ষে।

ধিন হাকার, অবতার, সাপু তার বক্ষে॥

ধরে ঘাড়, দের চাড়, বুকি হাড়, ভাজে।

হল ছল, চক্ষে জল, নাহি বল, জাঙ্গে॥

ধড় কড়, করে ধড়, মারে চড়, ভারী।

নাসিকায়, রক্তধার, বহুধান, হারী॥

হারিলেক যোধা মল, দেখিল সকলে।
জয় জয় জয় শব্দ হয় সভাস্থলে॥
দশুবৎ নাকে থৎ দিয়ে সাপু পদে।
হেট মুখে যায় মল, হীন বীর-মদে॥
যেন করি কর্দমে পড়িয়া, নত শিরে।
মন্ত্র গমনে বনে যায় খীরে ধীরে॥
নাহি চায় পশ্চাতে, না চায় অগুভাগে।
আপনার অপমান মনে মনে জাগে॥
মল্লযুদ্ধ পরে সাধু গিয়ে নিজ দলে।
কিছুকাল বিশাম করিল যথাস্থলে॥

পুনরায় সাজিয়ে আইল অস্বোপরে। সুশোভন শরাসন, ধনু ধরি করে॥ হ্মে তন্তু বিনিমিত কবচ পিধান। ভানুকরে জলে যেন অনল-সমান॥ किवा भित्त भित्यान डेन्द्रभन् छछ।। পূতে অদীচর, মেন জলপর ঘটা॥ পুনরায় ভ্রী-শব্দ হয় রঙ্গ-ভ্মে। উল পুন পুন্দমারী মহা ধাম পুমে॥ মনে হয়, এই বলে "কে আছে এছলে } সাগুসহ শরশিকা দেখাও সকলে।" ভূরोনাদ-শেষে, এলো এক বলবান। নামেতে অৰ্জুন বিংহ, অৰ্জুন নমান॥ প্রথমত শর কাটাকাটী আঁকে আঁকে। দুই বার ঘোরে তথা শত শ**ত পা**কে॥ এ মারে উহারে শর, স্থির লক্ষ্য করি। প্রতিপক্ষ কাটে তাহা অনুর-উপরি। অমনি সন্ধান পুন করি সেই জন। ব্রিষণ করিতেছে কন্ত পুহরণ॥ কটাকট্ কাটাকাণী, অগ্নি উচে ভায়। जशाजग किछूरे ना स्ति त्या याग्र॥ পরিশেষ, লক্ষ্য এক হল্যো নিরূপিত। স্তয়োপরি জলপূর্ণ পাত্র–আরোপিত। সলিলে ভাসিছে এক প্রফুল্ল কমল। नग्रत्न ना मृणा इत्र देवहे भठमल।

শত হস্ত অন্তরেতে সন্ধান লইবে।
পাত্র ভেদ পরে লক্ষ বিদ্ধিতে হইবে॥
প্রথমে অর্জুন সিংহ করিল উদাম।
ভূজার হইল ভঙ্গ, লক্ষ্যে হলো ভূম॥
ন্তয় বেয়ে, কমল কমল সহ ছুটে।
হো হো করি, জনারণাে হাসারস ফুটে॥
লজ্জা-নমু-মুঝ, বার হৈল সভান্থলে।
অর্জুনের নামের কলঙ্ক সবে বলে॥
পুনরায়, পূর্ণ পয়ঃপাত্র প্রস্থাপিত।
পুনরায়, পদ্মপুকা তাহে আরোপিত॥
শত হস্ত দ্রে, সাধু মারিলেক তার।
বিধিল বারিজ ছেদা ভূজার শরার॥
না ভাঙ্গিল ভাজন, না পড়ে বিন্দু নার।
"ধনা ধনা ধনা দাধু" কহে যত বার॥

হেন মতে হৈল বেলা দ্বিতীয় প্রহর।
প্রথার হইল আসি দিনকর-কর॥
তপনের তাপনে তাতিল বসুমতী।
ক্রমে ক্রমে মন্দণতি প্রাপ্ত সদাগতি॥
মুনূর্র প্রাণবায়ু সদৃশ লক্ষণ।
মন্দীভূভ মাতাক্ত হয় প্রতিক্ষণ॥
হইল বিশ্বর ভাব রমণী-সদনে।
প্রামজল বিন্দু বিন্দু উদয় বদনে॥
প্রভাতের পদ্মপাতে নীহারের হার।
আহা মরি মরি কিবা মাধুরী তাহার॥

স্তথায়েছে সুধাগর **লোহিত অধর।** ভানুকরে যথা ভূচয়ুক পুষ্পাবর॥ তথাপি কিঞ্ছিৎ আত্তি অ**নুভূ**ত নয়। বলিচক্ত-প্রতি সবে স্থির নেজে রয়॥ মহা কৌত্হল মনে, একালু অন্তর। বীরত্ব বিক্রম, করে নহন-গোচর॥ সেই রসে সুর্সিকা সকল মহিলা। ুৰুৱাক্ৰমে, এক এক প্ৰমনা প্ৰমীলা।। বীরত্ব-বিহীন, রূপে রতিপতি প্রায়। হেন জনে, কটাকে কদাচ নাহি চায়। অপুর্ব্ব সাধুর শিক্ষা দেখিছে সকলে। শোভিছে কুমার সম রঙ্গভূমি স্থলে॥ তারকা অসুর প্রার পরাক্রমযুত। কত কত প্রতিযোগী, হৈল পরাভূত। চাচিক চৌহান সঙ্গে অপুৰ্ব্ব কৌশল। দুই বীর উর্দ্ধ শির প্রচণ্ড প্রবল॥ তাদী হস্ত দুই মস্ত অংখ আরোহণ। ঘন পাকে বলিচকে করিছে ভুমন॥ মাথায় **ঘূরিছে** অসী, কত শত পাকে। কভু বা ভর্জন করি, ফেরে তাকে ভাকে॥ কভু চারি ভিতে, খ্রাইছে তরবার! কিছুমাত্র দৃষ্ট নাহি হয় দেহ কার॥ কড়ু তরবারে, তরবারে ঘোর রণ! থচা থচ্ কান্ কান্, ভীষণ নিঃস্ন্।

60

হেন **দ্বির লক্ষ্য**ুক্রি, চালাইছে অসী। অতি বেগবতী, যেন তার। পড়ে থসি॥ বোধ হয় কটি।গেল দাধুর শরীর। হের কিবা বার্থ তারে করিতেছে বীর॥ চকিতে ঘ্রায়ে ঢাল ঢাকি নিজ শির! नाक्ष्मा कतिन श्रकिरयातीत अमीत॥ ঘুরায়ে আপন অস্ত্র হানে হান্হান্। থান্ থান ভেঙ্গে পাড়ে জরকার গান। মারিতে উদাত পুনঃ গঞ্জর পদারি। চৌহান, দিহত জান, দহিতে না পারি। মধাস্থ, সময় বুকি মধ্যে থাড়া হয়। निवर्खिया याय माधू, गयर कर कर । (लोको त्री, खर्गना मूधना श्वनि करता। ''সাধু সাধু, সাধু সাধু,'' কছে যত নরে। মাণিকা আগন থেকে করি গাতোখান। ইঙ্গিতে আ**পন হানে** করেন **অাহু**ান। प्रस्थानित, वनि यथा मीप्रस्थितीयन। সেই দিন হয়ে, সাগ্ করিছে গমন॥ त्राम खरम, जूतम याहे छि श्रीरत थीरत । আপাদ মন্তক স্নাত পরিশ্রম-নারে। মেখনাদ নাম তার, মেখবর্ণ-ধর। ম্দুগর্কে মন্ত গতি, ফুল কলেবর ॥ निक श्रुषंत्र मध्य नमत निकार । महानत्म (ह्या नय करत छेछतासः॥

काश्रुत्व निकटि (रुत्रि. ब्रह्मारवारामन । ধারাকারে করিছে কুসুম ব্রিষণ। ্রোলাব, স্বেবতি, নাগকেশর, কেশর। ভূচমুক, চমুক, অশোক শোভাকর॥ কুরুবক নানাজাতি দিতাদিত, পীত। পলাস, পুনার, পরা, পল্ প্রোম্বালিত । মলিকা, মাশতী, মধু-মাগৰী-মঞ্জরী। অার আর কভ মত কুসুম-বলরী i मूनोउन मनशरक माथा गर क्ल। খরি**ল ধবল** বর্ণ সাধুর দুক্ল । এমন সময়ে দেখ অপূর্ব্ব ঘটনা। হেমথাল করে, এক নবীনা ললনা ॥ কুসুমের মালা ভাহে শোভে মনোহর। भीत्र भीत्र शक्ति कत्व यथा वीववव ॥ তুরুল রাখিল সাধু প্রমন্থ নির্থি। কহিতে লাগিল কথা কুমারীর স্থী ॥ "ধর, ধর, রাজপুত্র, এ কুসুম-হার। कूमात्री बीकर्मारति कृष्ठ शूतऋात ॥ দেথাইলে রুছ-ভূমে শিকা চমৎকার। তব যোগ্য পুরস্কার আছে কিবা আর? করিলেন সমর্পণ পাণি সহ প্রাণ। এই কুসুমের হার তার অভিজ্ঞান 🛮 🔧 अंध बुंनि मौबेंद्विभी प्रामा (एस करता। উল্লেখ্যে কহে সাধু অখের উপরে॥

4

🥞 তান তান সভাস্থি সমস্ত জনগণ। " कर्मात्वीबुख अहे भाना मृत्नाजन ॥ "সরলা ভূপতিবালা আমারে বরিলা। <sup>°</sup>''অ্যাচিত ধন-দানে কৃতার্থ করিলা॥ " কিন্তু এই পূর্কাপর আছে ধর্মনীতি। "এই শ্রুতি, অই সর্বদেশে রীতি। "পিতা-সত্তে দুহিতার মতক্তা নাই। 🄲 যার ধন, ভার কৃত সমুদান চাই॥ " উরিণ্ট-ঈশ্বর যদি দেন এই নিধি। " গুরুণ করিতে পারি যথা শাস্ত্র-বিধি॥ ''নতুবা একার্য্যে মম অভিমন্ত নয়। " পরিণয়ে পাণিদান উপযুক্ত হয়॥ "মানময়ী মনোলোভা মহীপ-কুমারী। "মান-ভঙ্গ করিতে তাঁহীর নাহি পারি॥ "অভএব, মালামাত্র শিরে ধরি পরি। " এই निरंत्रत प्रमें, धन महहति॥ "यथारिधि विवाद्य यमि পाই हिका। " ভবে দে বরিতে পারি ভূপতি-বালিকা अंछ दिन नमान्द्र माना जुरन नर्श ্ভূষিলেক শিরস্তানে ব্যিত-মূথ ইয়ে॥ वनी-ठक रेटए वीत इहेन बाहित। ় তিমির করিয়া ভেদ, যেমন মিছির॥ लाकात्रण भारक উঠে मही रकानाहन। कड देश हैरि एउ पृतिकू नकन ॥

इक्ट बरन कि विनन मुद छनि नांडे । কেছ বলে এমন না দেখি কভূ ভাই। কেছ বলে কেমনে এমন হুট্ছে বল ? কি ভাবিৰে রাদপু<u>ল</u> অরণ্য-কমল। কি বলিবে তার পিতা চণ্ডদেব রায়। হইবে সমর খোর বৃকি অভিপ্রায়॥ হেন অপমান কভু দহিতে নারিবে। তার সহ এ বিবাদে সাধু কি পারিবে ? क्टि बल कर्माप्तवी कविन कि काय। হাসাইল রাজভান, রাজনা-সমাজ ॥ প্রাচীন, কুলীন, ধনী, পরাক্রান্ত অতি। প্রধান পদ্বী কার রাচ্চোর সংহতি? এমন বংশের বংশধর যেই জন। কর্মদেরী সহ তার সম্বন্ধ ঘটন॥ অনায়ালে সেই দক্ষি করিয়া ছেদন। অনোরে বরিলা বালা এরক কেমন ? बहेत्रभ नाना कथा नरम नाना हैन। म्राल म्राल करत मरत सालरस नामन ॥

এথানে সংবাদ তন, শ্রীমাণিকা ভূপ। উথ**লিড চিন্তা-জলে** চিন্তরূপ কূপ॥ বিষয় বদনে পুরে করয়ে প্রবেশ। নি**দ্যিরে ডেকে** আনি জিজালে বিশেষ॥

" একি কৃছ গো কুমারি, একি কৃছ গো কুমারি । " ক্ষেত্র ভোমার কর্ম বৃদ্ধিতে না পারি ॥ ও ৪

'' (यहे जनत्न प्रवृत्न, (यहे जनत्न प्रवृत्न। "कला।-मारिनी इस था। उ जिस्तरन ॥ " যারে বলহ নিশ্নী, যারে বলহ নিশ্নী : " সুরভা নন্দিনী প্রায় আনন্দ ব**র্দিনী**॥ "কহ তারে না জিল্পানি, কহ তারে না জিলে -়**" পরে সমর্পণে কত দুইব<sup>®</sup>রাণি** রাশি। "कुन मोन क्रभ छन, कुन मोन क्रभ छन, '' সর্ক্রতে যদি কেই হয় সুনিপুন।। "ভবু নহেত শোভন, ভবু নহেত শোভন। " কন্যার ভমতে তারে অপরে অর্প।।। " ৰীর-ভোগ্যা এ মেদিনী, বীর ভোগ্যা এ ে **" সেই রূপ** বীর-ভোগ্যা বীরের নব্দিনী। " (म अ मीडा खनर के एम अ मीडा खनरहो. " মানদেতে বরিলেন রাম রঘুপতি॥ "ধনুর্ভঙ্গ প্রুকৌশল, ধনুর্ভঙ্গ সুকৌশল 🖟 " রঘুবীর ভিন্ন ভাঙ্গে কার হেন বল। " (नुरेशबीत अरुयदन, रनुरेशनीत अरुयुदन) " সেইরুপ পুরস্কার পার্থ ধনুর্দ্ধরে ॥ " ममग्रही मिहें बर्ग, ममग्रही मिहें बर्ग। " লেবভুচ্ছ করি বরিলেন নলভূপ। "এই নীতি অনুপম, এই নীতি অনুপম। "" मञ्जूषि मुर्श्यत और वीक मरनावम । "वधा अ दीषि ना हत्म, यथा अ नीषि ना 🥕 " नाना विष्युना श्राय घटि तार स्टन ॥

```
"আর কহিলে আপনি, আর কহিলে আপনি।
```

- " প্রতাপে মার্ভ্ড চণ্ডদেব নৃপম্ণি :
- '' সাধু কভু নন নান, সাধু কভু নন নান।
- "রাজ-স্থানে তার সহ কেবা সমগুণ?
- " দেখিলেন সাক্ষ্য তার, দেখিলেন সাক্ষ্য তার।
- " तरु त**रु बनवान** श्**उ-**ञ**श्कात** ॥ 🤏
- "কেহ বাকী নাহি ছিল, কেহ বাকী নাহি ছিল।
- " কন্ত দূর থেকে কন্ত ক্ষত্রিয় আইল॥
- " নভে মানিলেক হারি, নভে মানিলেক হারি।
- " मडाय माधुत जय मिल नत नार्ते।
- "ধর্মপক্ষ কি বা হয়, ধর্মপক্ষি কিঁ বা হয়ঃ
- " বিচারিয়ে দেখুন জনক মহাশয় 🖫
- '' লোকে এই পরিক্রান, লোকে এই পরিজ্ঞান ৷
- "পর্মা তারি পকে, যারে করে বাগ্দান ॥
- " यनि ইহাই প্রমান, যদি ইহাই প্রমান।
- " কি হেতু অন্যথ। বাদ প্রকাশে পুরাণ ?
- " দেখা ক্লকিন্নী-ছরণে, দেখা ক্লকিন্নী-ছরণে
- " দ্তা-বান্ধা শিৱপাল পরাভূত রণেঃ
- " আর সুভদা- হরণে, আর সুভদা- হরণে।
- " অপমান देशनात मानी मूर्व्याध्रत
- " অতএব নিবেদন, অতএব নিবেদন 📳
- " অধর্মের উত্থাপক্তে নাছি প্রয়োজন।
- " এই শান্ত मूरमाञ्चन, अहे भान्त मूरमाञ्चन।
- ''যার প্রতি রভি, মতি, পতি সেই কর্ম

''হলো অনাথাচরণ হলো অনাথাচরণ। "নিশ্চয় তোমার পদে তেজিব জীবন ॥" छनिए कन्यात कथा, खेतिए-श्रेश्वत ज्था, मत्न मत्न करत्न विहात । "যথা যুক্ত কথা সৰ, হইয়াছি হত-রৰ, ইথে কথা কহিব কি আরু ১ "বিশেষে যেরপ মন, করিতেছি নিরীক্ষণ, मा जानि, कि कहिएड कि इस । ''সাধ্পতি স্বয়ন্ত্রা, ইথে কাশা ভঙ্গকরা, কান মতে উপযুক্ত নয়। ক্ষেত্র ক্ষেত্র পুত্র কন্যা, এক কন্যা ধরা-ধন: 🕶 गদি এর আশাভদ করি। "পর্মের ব্যস্তার হ**েঃ** লোকে নিদারুণ করে, অপনশ রবে ভবে ভরি॥ "পাত্র কেবা সাধু সম, যা থাকে কপালে মন रिज मानि जात्त कनामात्न।" ্ৰত ভাবি মতিমান, তথা হৈতে গাতোপ कति यान वाश्वि (मवादन॥ ডাকিয়া অমাত্য-বরে, কহিছেন মৃদুস্বরে, क्संदिनवी-विवाद-नश्चाम । ্রী**লাধুসহ প**রিণয়, হইবেক সুনিশ্চয়, অনাথায় বিষয় প্রমাদ ॥ 🏄 खाक मिरत्र चान ভाठि, ठिका नरत्र सर्गिएने. ্ৰাধ্র নিকটে যাকু দেই।

"কর সব আয়োজন, বিলয়েতে প্রয়োজন, নাহি আর সারোদার এই॥" আজা ভানি মন্তিবর ভাকি সব পরিচর, উদ্যোগ করিছে নানাকপ। ার মধ্যে বাজে শাক্রমণা-মণ্ডলে জাঁক, उथिनि जानस्मत कल। डाडे छन वाथानिया, উत्ततिन टिका निया, সাধু সূথে করেন গ্রহণ। অক্ত কুসুম চয়, সুগন্ধ চন্দ্ৰ-ময়, थाना, मृद्धं, औकन, काश्म । টিকা পৈয়ে বীরবর, প্রেমেৎফ্ল কলেবর, ইছৎ হ'নিত বিষ্ণাধর। স্টে-প্রায় পত্নকলী, প্রভাতে প্রকৃল অলী, দুখের নাহিক অবাতর নুথী সহচরচয়, হাস্য-কথা কত কয়্ বৃহস্যের পরিসীমা নাই। কেছ বলে শুভ যাতা, সুখোর নাহিক মাজা, মুভুক্তে করে। ছিলে ভাই॥ কেছ বলে এ যাত্রায়, তব ভাগা লতিকায়, धित्रल विवाह श्रुभशकतो। এক যাত্রা ভিন্ন ফল, প্রজাপতি কার্য্য-বল मूतारद्वार मूर्ळ्य नकलि। এইরূপ হাস্যা-রূসে, দিনকর পাটে বসে,

वाहिन ऋगमा मुश-श्रमा।

খন খন বাড়ে খোর, ফুটিল কুন্দ-কোর, হাস্যমতা চন্দ্রিকা প্রমদা। वर्ष्ट्र मन्द्र ममोत्रन, ममूपिठ एउक्रन, সাধু চারু বর-বেশ ধরে। সহিত বয়সাগন, করি-মানে আরোহন, করি যায় বিবাহ-আসরে ॥ বাজে বাদ্য মনোহর, নৃত্যালীত খর খর, হাস্য-রুম কৌত্ক-কলাপা। বাঁধ্রিয়া হন্ত্রীর তান, কালবৎ করে গান, 🏅 কন্ত মন্ত রাগোর আলোপ 🛭 ভাটে পড়ে রায়বার, অন্তঃগুরে কুলাচার, বাধাই বাধায় বরাজনা। সভায় পঞ্জিরগণ, করে বেদ-উচ্চারণ, কুল-দেবতার সমার্চনা মঙ্গল-মুখীর গীত, মোহিত কর্য়ে চিত, দুন্দুভীর সহিত গাহন।। नकल मूर्थंद्र मृक्षि, विवाद्द्र खडमृष्टि, বর কন্যা চাহনা চাহনা ॥ नक्दा-नगुम्भो नाला, मरन পर পুका-भाला, মনে পড়ে ভথাকার কথা। ঈষৎ হাস্যের রেখা, সুধাধরে যায় দেখা, আধ-ফোটা বকু জীবে যুগা॥ কভু বা বিশ্রম্ভ রুদে, নেত্র নীল-তামরুদে, विनारम माधुती मत्नाह्ता।

আনন্দে পুমন্ত মতি, আশালতা পুৰুপরতা, হৃদ কোষ নব ভাব-ভরা 🛊 পতি-বাম-ভাগে বসি. হেরে প্রির-মুখ-শশি, বৰাঞ্চল বসনে তাহার! श्रेष्ठा यथा घरन घन, किंवा उथा श्रुरवाजन, বদন-বন্ধন কোন ছার? प्रवाध प्रकार, करा। करत मधर्मन, মহীপ মাণিক্য- সেব রায়। প্রাক্তাপত্য সম্পোন, দীন দ্বিদ্দলে দান্ मरत मुट्य इंग्ल विमाय ॥ পুচাত হঠল নিশা, পুকাশিত দশ দিশা, ললিত পঞ্ম পিক নায়। ্কেশ্র মূর্ডী মহ, প্রাহিত গল্প-বছ, ভর ভর ধর মরে তার ॥ ভুমর কমল-কোলে, সর্মা হিলোলে দোলে, প্রবাহেতে পাত্র পরাগ। खर्का विकास करा, जेन देन हम हम. কিবা জলে ছালে ভানু-রাগ॥ महाजन मर्खेषन, नाना प्रज আয়োজन, বর কন্যা বিদায় কারণ। থৌতুকে কৌতুক মানি, কত রতু দিল **আনি,** চত্রঙ্গ, ত্রঙ্গ বারণ। দুব্য-জাত কতমত, দাস দাসা শত শত, কত কব বিশেষ তাহার।

क्रे इंट बिमाधको. एन क्रश महहतो, সঙ্গে হলে চলিল হাজার। 📑 য়াধারী \* নামধরা, ব্রিবৃত্তি এরতরা, কেশ বনাইতে সুনিপুণা। কত ছলা কলা জানে, জ্ঞানবতী নানা জ্ঞানে. যন্তে, মন্তে, তত্তে, বহু গুণা ॥ मुमझ (मार्क्स वीना, वामरन ए मूथ्रीना, वयरमण्ड (क्वल नवीन!। ক্টাম্ফে কামের শর, কলকণ্ঠে পিকস্বর, পীন পয়োধরা মধাক্ষীণা विश्रण कुड्डल डाइ. नवीन मीहमाकाइ. ৰিবিড় নীলোৎপল ভাতি। ্র হেরে তাদের পানে, মাধ্রী মাদক-পানে, হতজ্ঞানে করে মাতামাতি ৷ দঙ্গিনীগণেতে যার, এত রূপ অবতার, তার রূপ বর্ণিব কেমনে। চলিল রঙ্গিনী রঞ্জে, প্রিয় প্রাণপতি সঙ্গে, द्रें यथा श्रीय পতि मत्न। উন্তিক অন্তঃপুরে, প্রসম্বতা গেল দরে, মহিষীর চক্ষে বারি-ধারা। **দক্ষিমী রহিল যারা, কাতরা হইল ভারা**, বিগলিত অঞ্চ তারাকারা।

<sup>\*</sup> ৰীয়াধারীণ্ অর্থাৎ দীপ ধারিণী, প্রত্যুৎ বিধি কলায় প্রভ

মাণিক্যের পদতলে, লোট্টান্তে ধরণীতলে, বর কন্যা করিল প্রণামঃ

জামাতার কর ধরি, বিহিত বিনয় করি, কছিতেতে বচন ললাম।

- <sup>41</sup> শুন বাপা মহাশয়, যদিও উচিত নয়, তব প্রতি উপদেশ বাণী।
- "নিথাল কল্যাণ-ভূমি, গুণের নিলয় তুমি, জানি আমি গুলি অতি জানি॥
- " उथा शि कहिएक इस् एम एक प्रजनसम्, এই प्रमाकमा। कर्मा एमती।
- ্ত জন্মান্তর পুণ্যব**লে, প্রদন্ম ললাট কলে,** পাইয়াছি দেব দেবী **দেবি ট**
- " জবিরাতি যত দিন, হইরা**ছি দুঃধহীন,** আনংক্তরিল এই দেশা
- া বিবিধ বিনোদ গৃষ্টি, সময়েতে **হয় রুটি,** কোন গৃহে নাহি **রেশ্ লেশ**॥
- "নাহি আরে মুত মুতা, এই সর্বে ওভযুতা, গুহানন্দ-দায়িনা নন্দিনা।
- " যথা জনকেরে সদা, রত্ন-পরিকর-প্রদা, ু জলধিজা জগৎ বন্দিনী॥
- "পয়োধি-মন্ত্র পরে, ধরি পদ্মালয়া করে, লইলেন পুরুষ উভ্ন।
- " তদৰ্ধি পুনা-লোক, গোলোকে পুলকালোক, সদাকাল সুথ সমগ্ৰম।

" এখন সলিল-নিধি, পরিপূর্ণ নামা নিধি, কিন্তু নিধি কুমলা কোথায়? "কর্মদেবী দিনে মোর, এঘর হউবে ঘোর, হায় দুঃশ ভেষে প্রাণ যায়॥ " আর কিছু ভিক্ষা নাই, তব স্থানে এই চাই, यथा यट्ड जाशिका हेशादा।" এত বলি নরপতি, শেশকেতে কাতর অতি, দ্ফি-পথ রোপ অঞ্হারে॥ হেরিয়া পিভার গাউ, মোলম্ফ ওণবভী, কর্মদেবী মৌনমূলে রন। ললিত লালন-য়েহ, তাল্য-বিলসিত গেছ **মারি মা**রি বিচলিত মন 🛭 আঁথি মৃছি চারুশীলা, রখোপরি আরোছিলা, মেঘাতায়ে নলিনা যেকপ মৃ**হর্তেক বৃ**টি পরে, ভার প্রভা পরিকরে, প্রতিপত্তে শোডা অপরপ ॥ কত ভাব সম্দিত, তাহে চিত সুম্দিত, যেন নৰ ব্যুমকা কুদুম। ামেছন সুরভি তার, সমীরণ সহকার. আমোদিত করে পুক্তাভ্য॥ চलिन उपनी उर्ज, थानिश्र পতि-माज. কত রুদ সর্দ সমায | ফুলবনে ফুলবাণে, বিমোহিত ধ্যানে জ্ঞানে, (य इड्न विषम विनाम ॥

তথা প্রেন সরসাল, হল্যো অঙ্রিত-বাজ, মকুলিত লুলিত এখন। হই বাহে ফ্রন্থ, হবে তার কত মুখ, আগেদ ভিলোলে महुद्रव ॥ এমন সময় খুন্ ত্রীনাদ্পুনিঃ প্রঃ अमरद्वास निनापिष रहा। **बृत्राञ्चत् (रा**या तृत् भाषातृत् भाषा मत् मरल ५८०। शल्या गरुम् । जामिर्डए এक पृष्ट, यर्जाउनी द्रञ्जूङ, मनार्न (एटशत कात्य इंडि । यथा माभ बोत्तत् उधा (महें अनूहत, **উপনী**ष्ठ देशन पड़-याड़ि॥ শির নোরাইয়া কয়, "খন খন মহাশ্র, রাক্পাল অর্গা-কমল। এই পত্র জাপনারে, সমর্পন করিবারে, खाधारत निर्मान न ड-वन ॥ যথা বিধি তদুত্র, সভুরে হে গুণসর. পত্যোগে প্রদান করুন।" এত বলি পত্র দিয়া, রহে ঘোড়া থামাইয়া, ভানু অগ্রে যেমর অরুণ॥ মুদু। মুক্ত করি পরে, পত্র পড়ে কন্যা বরে, উভয়ের চঞ্ল নয়ন **দুই ভাব দু** জনায়, দুই মথ-ভলিমায়, বিভাগিত হইল তথন ॥

н 2

সহসা বাযুর ভাব হইল ব্যক্তী।
আবার উত্তর থেকে শীত-বায়ু বয় ।
মুদিল মৃকুল মুখ, লাবণ্য ঘাইল।
ললিত ললাম লাল রঙ্গ শুখাইল॥
নির্থি সে ভাব সাধু অধ্র ধ্রিয়া।
প্রবাধ প্রদান করে আদ্র করিয়া॥

"কেন কেন কেন প্রিয়ে এমন হইল তব ভাব ছে: "বার বাল। বীরে মালা দান করি অভাব কি ভাব হে "সাধাকার সমরে আমার কেহ করে অপমান হে? " তব প্রসাদাৎ আমি ধনে ভাবি কাটের সমান হে।। : "ভৰ ছাস্য-মুখ গোৱ সম হাদে কত তেজ বাড়ে হে 🗄 " অৰুপদ দুখ পাই নৰ দুংখ অঙ্গ নৰ ছাড়ে হে॥ ু"ভাই বলি পরিহার কর সব মন মলি**নভা** হে। 🌁 মন চিত্ত সরোবরে যাহে হেলে দোলে প্রেম-লতা হে 🗵 **" তোমার বচন মু**ধা যত শ্রুতি-বিবরে প্রবেশে ছে। "তত্ই ছুক্ক-দেশে মন নাচে মদমন্ত বেশে হে॥ **শক্তিছার সাহস করে ক্লোভ-দ**গ্ধ তারণ্য-কনল হে ? " অরণ্য-কমলে সাধ ভাসে যথা স্বৰ্ণ তদল হে॥ "ম্বর্ণ শুতদলপতি ভাঙ্গিবে তাহার ছহস্কার হে। "মুখে বসি হে প্রেয়সি দেখিহ প্রতাপ কত কার ছে 🛭 এইরপ প্রবেধি প্রদান প্রেয়দীরে। म्थामुरक हुम्रन कतिया भोद्र भोद्र ॥ ন্তন হে পথিকবর, এমন কি হতে । শাপভুষ্ট হয়ে তারা এসোছিল ভবে 🌡

# চৰুৰ্থ সৰ্গ।

দিবং অবসান হয়. নভোলোক ত্মোম্ম,
পূমর বরণা দিগসনা।

স্থির নেত্রে নেথা যায়, শোভাপার দীপ প্রায়,
দুই এক তারা গভূমণা॥

যেন নারিকার আংশে, প্রেমিকের হৃদাকাশে,
দুই এক ভর্মার ভাতি!
একবার একবার, ভাবপথে অবভার,
হয়ে পুন নিভায় সে বাতী॥

পরে প্রিয়া আগমনে, দীপ্ত হয় সেইকনে,
আর ভারে মলিন কে করে?

অस क्लांड मिनপতি, जाना जाता मोक्षिप्रजी. সুগশশা উদয় অন্তরে॥ তপনের তাপ মরে, হিমকর হিম-করে, সুশীতল করিছে সকলে। বহে ব্লিঞ্জ সমীরণ, দিনে ছিল হাতাশন, मङ्गर्छान (मान खन कल्ल ॥ नित्थित्य कान्त्रम्थ, जनताद्य कर मूथ, श्मान्यों कुम्निनी मछी : ত্ষিবারে শশধরে, দৌরভ বিদ্যার করে, मिश् मिशबुद्ध भवाधी ॥ क्रिष्ट तमान क्न, कुर्तिष्ट शिककुन, প্রদোষেতে মকরন্দ পিয়ে। वन विमानिनी लका, मानि करत श्रक्ल हा, পাইরে প্রকাশ করে হিরে॥ গন্ধ বিভরণ করে, পথিকের মনোহরে, এমন সুরভি চমংকার। অতি কুদু কলেবর, নাহি হয় সুগোচর, কিন্তু প্রবে সম কেবা তার ? नारम नव मञ्जूषित्त, कम्मना-उर्विमी जीत्त. র্থ আসি উপনাত হয়। শারাদিন শ্রমে অভি, হইল মন্র গতি, র্থ সংযোজিত হয় চয়॥ ঘনীভূত ষেদ-ধারা, অঙ্গে বহে ফেণাকারা, নত ভাব কেশর লাঙ্গল।

আরু আরু যত জন, বাহক বাহন গণ, मत्त कृता जुमाय वाकृत ॥ কহিছেন সাধু বীর, "সুএদ চন্দনা-তীর, কর মনে হেথার বিশ্রাম। পর-পারে রাটেরেরা, পেবেছে আপন ডেরা, এই মাত্র আমি স্থানিলাম ।" बाका (भरत महत्र मात्र, स्रीय नात्र (स संशीय, विভावदी कदिएड गाणन। পর দিন হবে রুণ, পর পারে শত্রণণ, লাগি অভিযাতে অগণন ॥ এমত সমতে খন, দড় বড় পুনঃ পুনঃ, অদ্যুর্তে অশ্ব পদ-ক্ষেপ ঔরিপ্টের অনুচর, লাদিতেছে জত-তর, लात जात तहन माधून । " শুন সাপ। মহাশয়, যা হবার **তাই হয়,** য। ভেবেছি ভাহাই ঘটিন। " ভবিত্রা ছিল যাহা, অবশ্য হ**ইল তাহ**়ি কালগতি কেবল কুটিল। " এখন উপায়চাই, আর ত বিলম্ব নাই, खनिटाछि गव ममाठाव । "মন্দ-গিরি \* পরিহরি, খোর রণ বেশ ধরি, অরণ্য-কমল আগুসার॥

আধ্নিক মন্দোরের প্রাচীন নাম। কোন গুরুকার লেখেঁকী

चारन महानामत्वत तम् डि क्लि।

"সমরের সজ্জা ভারী, রাচোর হাজার চারি, আসিয়াছে রণমদে সৈতে।

**তার যোগ্য** অনুবল, এনেছে প্রল দল,

মিহিরজ নাগরির। জেতে।

" অতথ্য সোগা হয়, মধা হেন শাহ্ৰ চয়। উপযুক্ত মেনা আয়েছিল।

"হবে তব অনুকারি, মোহিল হাজার সারি, সভ্রেতে করিব প্রেরণ॥"

"স্বস্তুরে প্রোভরে, কাল্যাজ নাহি করে। লেখে সাপু স্বায় নিবেদন।

" অবগতি মহোদয়, শলুপ্রতি কিবা ভয়, ধ্যান করি তব শীচরণ॥

"আামুক হাজার শভ, করুক বিশ্রুম যত, শুগাল স্কুপ জ্ঞান করি।

" যে আছে আমার বল, ভটি-কুল ভারু-দল, সপ্ত-শত বিজ্ঞানকেশরী।

"ইছাই যথেষ্ট হবে, রাচ্যের এ ভীমাহবে, তাল না পাইবে এক জন।

"অত্যাজ্য প্রদাদ তব, পঞাশ মোহিল লব, এই মাত সম নিবেদন ॥"

পত লয়ে ধার দূত, তারা-প্রায় গতি ক্রত, অভিদূরে নিমিষে যাইল।

ছইল যামিনী ছোরা, বিগত অঊম হোরা, নবনেতে সুষ্প্তি ছাইল। मिन अस्ति हतन, (यन मितन मोन करन, অক্ষতি উদয় বিমল। শীতল সুগন্ধ বাহ, চন্দনার কূলে ধার, खर्ल खर्क वल वल ॥ নেই দুমণ্র সংর, ঘ্ম-খোর বৃদ্ধি করে, এফেনারে ভর বসুমতী। কিবা পার্ড পাক্ষা নর, মৃত্তাল্ল কলেবর, मनन जारवर अक विजित পরিশ্রে দুই দিন, কাছর নয়ন মীন, कर्माप्तरो-काल वाथि निव। (यन भगवञ्जी (कारण, ननं मुध निष्ना-(ভारण, मुर्ग निषु। याय माधु दीव ॥ क्ड मुश स्थानग् श्नग् भाकारत् इग् 🏅 কৈন্ত হাষ্য ছটা বিশ্বাধরে। বেষি হয় প্রিয়া সহ, বিলসিত অহরহ, সন্তরিত সুথ সরোবরে॥ আবার দে ভঙ্গি গত, যেন রৌদু-রদে রত, উগুভঙ্গি অপান যুগলে। কপোলে অনল জলে, মধ্যাহ্নময়ুথ ছলে, अक छो। इल-गउम्रत्न ॥ যেন লক্ষ্য করি অরি, ভরানক ভাব ধরি, ভাসিতেছে নমর তরকে। আবার দে ভারাপত, বিপুত্-বিজয়ী মত, অপরপ শোডা ভুক্ল-ডঙ্গে 🎉

মদ-গবের মন্ত মন, ষেন করি আগামন, প্রিয়া-সন্ধির্যনে মহোলাস। অর্ণী ক্লাল রুণে, ছত গত সেনছদনে, একেবারে বিরোধ-বিনাশ ॥ এইরূপ কন্ত ভার, ক্ষণে ক্ষণে আবিভাব, হুইতেছে সাধুর জ্নয়ে। হালুরে স্থপন মায়া, নিখ্যা-দ্ফি ভোর জারা, কত ভাগ্তি দেখাও উভয়ে : मत्त मृत्य निष्ना याय. भिथिन भोडन काय. ত্তপু জাগারিত এক জন। कर्माएको निजन है जिल्लक मुनिक नय, নিদাবশ মহে এককণ॥ ट्रिट्स नाथंत्र मृश्, मत्न मत्न क्ष्म मुश् कडू मुध्य नक्षतिङ 🚒। একবার ভাবে মনে, অনাক্রানে এই বুলে, প্ৰাণপতি পাবেন কিজ্য় ॥ निक्र निका नव नव, अनुदार्श महार्थना ী মাভিবে তাহাতে মন প্রাণ। মনো আশা পূর্ণ হবে, পতি-প্রেম সুধান্তব, প্রেম-ত্রা হবে অবদা কপোত দমুতি মত, লোহাগ বাড়িবে কভ, কিন আৰু ছাড়াছাড়ি নয়! इहेरत बच्च क्या नाधुमम नमानाग, थीब योज असमें क्रय ॥

बोदबर विभिन्नी चाकि, विवदित मम बामी, দ্রীর-প্রসবিবী, ইর শেষ। ৰাহ্ৰলে পুঞাগণ, করিবৰক দুশাদী," বাড়িবেক পুনলের দেশ। পুন ভাবে অন্য মত, রণে যদি হন ছত. আমার ক্ষম-অধিকারী। কি হবে আমান দশা, কেথা রবে এতর্সা, কোথা ববে আশা মনোহানী ? द्रांक्षिरद्रद वच्छे इर. मामोवृद्धि नरस द्रव, ভাবিলে ত। शुनग्र विनद्ध । হায় হার হরি হরি, আর কৈ উপায় মরি, কার্ব্বেশ্বর যে ভাব অন্তরে। হার কেন জন-ওনে, বাঁধা গেল প্রেম-ওনে, অক্তিশাসরল মম মন ? राव्र 🗪 🏰 मल्लै (एथा श्रमा) कूल-बर्तन, প্রেয়-ম্বাস্থ তাহে লন্দীপন ? হায় কেন সংগোপনে, প্রেম-ব্রুত উদ্ধান ब्र₩कतिन कारन-गमन ! বাধুর মহলোদেশে, গালে ধরি পরমেশে, বিরতাম জীবন যাপন। शांत्र (क्रम मडाइटन, वर्त्रमांना वर्त्राटन, দিতে পাঠালাম সহচয়ী 🕬 যে কিছু আমাৰু দোষ, ভেবে হয় হৃদি-শোৰ. হায় হায় কি উপায় করি?

श्राय क्षेत्र किननश्, मृक्ष-जात उनीक्षत्र মম मृध्य-**जारन छ**श्जिस्स । অকালেতে বৃক্তি তার, বিনাশ ইউল সার, প্রেম-হুদ যায় বা মজিয়া "॥ এটরপ নানা রপ, চিন্তাজলে চিন্ত-ত্প, প্লাবিত হত্যেতে মহিলার ' কভু **আশি,** কভু থেদ, জদে করে রাজ্যভেদ, কত্ করণার আধকার। নানা রূপ ভার রান, শোভিছে বদন-ভাগ. কিরপে তা করিব বণন। নির্মাধিয়ে ইন্দ্র-ধনু, বিচিত্র ভাষ্ট্র তরু, চিত্র করে কেবা ক্লেজন ! धि दिन थात्क त्कर, यथा रेल्यू अनु त्मरू, জুলী ভূলি ভূবাইয়ে हुनोत्र। লেখে প্রতিকৃতি ভার, ছবে বৃক্তিঞ্জু শ্লোভার, কি**ধিৎ প্রকাশ প্র**তিভায়॥ শেই শ্লপ কিবা আর, স্বর্ণিছ সে ভাব জার, কত ভাব কতরাগ ধরে? वाष्ट्रित इनरत्र वादा, প্রাতে ইন্দাররে यथा. विन्द्र विन्द्र नीश्त्र क्रिश्नाहत ॥ নেই রপ্তালধার, বিগলিত মৃক্তাকার, · **লিপতিত** সাধুর বদনে। াদাগিয়ে উট্টিশ বীর, দেখি ভাব প্রেয়সীর,

\* (क्क रुक् " ), जिल्लाम नश्रत।

"কেন কেন কেন সুনঃ, বিষশ্ধ বদনাযুদ্ধ তব ছে। "হায় হায়, প্রাণ্যায়, জালিয়ে পোহালে নিশা সর্হে॥ '' অতি আদরের তুমি, যতন-বিরছে বৃক্তি মম হে। "নিদ্রা না যাইলে প্রাণ, আজ রাতি কাল-রাতি নম (হ্ 🏨 <sup>"</sup>গত দিন নরপতি যে কহিল বিদায়ের কালে **হে**। ''যতন করিতে তোমা, যথা উপযুক্ত ভূপ-বালে হে॥ ''কিছার কুরীতি মম, দেদিন পাইনু **দেই ভা**র হে। 'সেই দিন অনায়াসে হেলন করিনু আংমি জীর হে॥ 'ক্ষম অপরাধ মম, প্রিয়তমে. প্রাণের আধার হে। ' আর হেন দোষ কভুনা হইবে, প্রেয়দি, আমার হে॥ 'এদ্যো এদ্যোমন কোলে, আন্তি দূর কর কিছু ক্লণ হে। 'জাৰ্মানে চুল চুল্, ছৰ ছল, যুগল নয়ন হে। ্ত 🗱 মম 🗪 নাদরে, ধারাকারে সলিল বহিছে হে। ' নহেনা**্লাহেনা, দোই জলে** মম হৃদ্য় দহিছে হে ॥\* দেখিহ দিবলৈ আজি, তব দাস বিক্রম প্রতাপ হে। 'ডভ যাত্রা হয় যাহে, কর প্রিয়ে ভেজিয়ে বিলাপ হে ॥'\* এত বলি কোলে সাধু লয়ে প্রমদায়। আপন বগনে তার নয়ন মৃছায়॥ कर्मारमची कन, "नाथ अकि वावशाताः

"কেন সিছে অনুযোগ কর আপনার। "তুমি যথা আছে, মম রোদনে কি কাজ। "সভ্য কথা কহি নাথ পরিহরি লাজ। "তুমি নিদ্রা থেলে, সথে মম নিদ্রা নাই।

"ভাৰে শতু নিৰুটোভে, মনে ভয় পাই 🦫

" কি জানি নিশাখ-কালে ব্ৰুটের সময়। "ছলে কলে আৰি যদি তব প্ৰাণ লয়॥ "প্রহরা হইয়ে গেল তৃতীয় প্রহর। " নিদ্রা আসি নেত্রদারে হল্যো অগ্রসর । " তেঁই দে অলদে আঁথি অশ্রু-ভারে নত। " মিছে আ'ঝ-অনুযোগ কর নাথ কত। " मिष्रा ना হইবে, গত-প্রায় বিভাবরী। ্ৰাই গিয়ে জাগাই হে যত সহচরী। "চন্দনার চারু জলে করিব হে স্থান ৷ "পুজিব তাহার তীরে দেব ভগবান। "তোমার মঙ্গল নাথ লইব মাগিয়ে। "ৰিধিমতে ইফী কাছ এনিশা জাগিছেই " করিব মঙ্গলাচার মঙ্গল স্মরিয়ে 🗗 🤻 "দেখাব হে পূর্ণ ক্ষট নয়ন ভরিকে " আমারে আদর কর মৃগাক্ষী বলিয়ে। "मिथित रम भृत, यत्व यात्व 🗨 विलिय ! " বামে শব চাই প্রভু, রব শবাকার। "यनविश्व क्रांम पूर्य ना मिश्रित আর।" প্রাকৃ তানি সাধুর নয়নে আঞ্ছার। ক্রিট্র চন্দ্রমা মুথে অমৃতের **ধার।** উটিলা হসিতমুখী হিরগা-বরণী। खेवाद्व खेवाङ्क अनुस् अङ्गारम अङ्गीन याग्र सक्त नथीकूल निमुाग्र व्यक्तिना निगात स्पिठ दस्य विस्तात क्नकः

কারু চারু কবরী লোটায় ধরাতলে। নামিল নিবিড় মেঘ বৃকি ভূমওলে। নিদ্যুযোগে মৃথে হার্সি সৌদামিনী প্রায়। ক্ষণে ক্ৰে দেখা দেয়, ক্ষণে লোপ পায়। ষ্টবৎ বিভিন্ন কারু বিশ্ব ওষ্ঠাধর। দেখা দেয় মৃক্তা পাঁতি শোভার আকর। ু<mark>বান্</mark>তরে বালিদ করে রাঞিয়াছে শির I আহামরি মৃণালে কি রাতুল রুচির। কেছ বা দুনুপ্তি ভোগ করে উভরায়। নাসিকায় নিশান প্রখাস খন ধায়॥ यथा नादा नक मृती मृख-कल्ल रहा। थन थन निर्धाम विकास इट्स इट्स इट्स কর্মদেবী সকলেঁর শিরে হাত দিয়ে। मधुश्रद्ध नाम धरता रान जानाहरता ষেন ভানুকর পরশনে পদাকুল। জাগিল সঙ্গিনীগণ হাদ্য সমাকুল ॥ **চ**िल कन्त्रा-द्वारम क्थल क्दर्व। मद्राली-महली यथा यमूना-कोवरन। লাফাইয়ে পড়ি জলে দিতেছে দাঁভার। জল-কেলা-কলা-যুতা অপসরা আকার। েকেহ সোতে আঙ্গ ঢালে পৃষ্ঠে রাখি ভর। ্রেমলতা ভাষে ধেন জলের উপর॥ হারুরে জগৎ লালা বুকে উচাভার ! . এক পারে হাগ্যজীলা কৌতুক অপার 🛊

অনা পারে সমরের সাজ ভয়কর। ছাড়িছে বিশাল দীপ্তি মশাল নিকর। मृद्ध (श्रंक (मथा याग्र डेड़िएছ निनान। সঙ্গাম-পুরুব-শিরে ভীষণ বিষাণ॥ বাজিতেছে রণত্রী ভেরী ঢাক ঢোল। মাকে মাকে হর ইর শব্দে মহাগোল। কিন্তু রাজপুত-পুল্রীগণে কিবা ভয় ? আর পারে কেলী-কলা-রুসে মর্ম রয়॥ প্রভাতের প্রভাকরে প্রাচী হাদাবভী। জল তেজি স্থলে উঠে যতেক যুবতী॥ (मरे मिन मत्व कर्मामवीद्व माजाय। যার যত নিপুণতা প্রকাশিছে তায়॥ চমরীর দর্পহর। চাঁচর ক্বরী। বিনাইয়া দেয় চন্দু-চ্ডা সহচরী॥ एक्षी खत्ना अथी भूषिंड भून क। ভাল ভূষিতেছে ভাল অপ্তরু-তিলকে 🏾 অঞ্না নামেতে আলী লইয়ে অঞ্ন। সাজাইছে সুর্জ্তন নয়ন থক্তন॥ মুক্তালতা নামে নথী লয়ে মুক্তামালা ৷ ু**লমাদরে সাজা**ইছে ভূপতির বালা। কি ছার দে মোতী-হার, কিবা জ্যোতি তার সে অঙ্গমীপে হল্যো মলিন আকার॥ वाएँ-यूर्श मिल मधी वलग्र विकरि।। বরকাত্তি কাছে ছার হারি মানে ছটা।

হীরকের কর্ণফুল শোভে কর্ণমূলে। পাইয়ে উত্তম স্থান বুকি হেলে দুলে॥ কণক-কিঙ্কিণী পেয়ে কটিভটে স্থান। আনন্দে মাতিয়ে করে মধ্যরে গান 🛮 कारेना मुट्टना मधी नरेदा उमन। ছাঘরা ওড়না চোলী কঁচেলী-ক্ষন॥ धन नील हाकू शर्डे तमन-कलक। भारक भारक खन शक्ती मिरङ छ कानक॥ কত বা কৌশল সব পিন্ধন-পিধানে। যে চত্রা হয় তাহে. সেই ভাল জানে ॥ অঙ্গের বলনী ছাঁদ ল্কাতে প্রয়াম। অথচ দকল ভঙ্গী ইইবে প্রকাশ॥ যথা কবিতায় রদ-ভূষণ প্রদান। কথন না হয় যেন রস মূর্ত্তিমান ॥ ঢাকিবে উপরে কিন্তু রাখিবে এরপ। যাহে প্রকটিত প্রতি রূপ প্রতিরূপ॥ হইল বিন্যাস বেশ বিনোদ বিশেষ। যেন লক্ষ্মী ধরাধামে করিলা প্রবেশ॥ বসিলেন বরারোহা পূজার আগনে। ধ্যানে ধরিলেন ধনী ধ্বান্ত-বিনাশনে ॥ মহাধ্বান্তহারী তেজ যেই ধ্বান্তহরে। প্রতিদিন চলাচল সূপ্রকাশ করে। যাঁর শৈতা সুধায় কৃতার্থ সুধাকর। याँत चाटन मधोद्रश वर्ष्ट् निवृद्धतु ।

যাঁর তাপে হতাশনে তাপন-সঞার। যার কৃপা-বারি-গুণে তুষার সুনার॥ সর্বতে সমান ডিনি সর্বতে মঙ্গল। विमामान मर्क्ड्रल निथिन निम्नन ॥ হিন্দুধর্ম মর্মা এই সর্বভতে যিনি। যত্র তত্র করে পূজা জানিবেন তিনি। জল, মূল, আকাশ, সমীর, বৈশ্বানর। पिनकत् निशाकत्, नक्क ज-निकत् । তরু-লতা, পাদাণ, প্রতিমা নানা মত। দৃশ্যমান এজগতে পঞ্চীকৃত যত॥ উপাদ্য না হর তারা উপাদ্য ঈশর। যিনি সেই শর্ক ভূতে বাঁগত নিরন্তর॥ রাজপুত্র পূজে তাঁরে দিনকর-করে। প্রভা**ত প্র**দোষে **হেরে ভা**ব ভক্তি ভরে॥ পূজা অন্তে পত্ম মুখী প্রণমিলা পদে। ম্বত করে মৃদু মধুষরে ধ্রুবপদে॥

গাত।

#### রাগ ভৈরব।

"দিনকর, দয়াকর, তমোহর, হর মন্ন তাপ তম-নিকর।
কুমি ছে প্রভু দবিতা, জীব-শিব-প্রদায়িতা, দর্মদূথ-প্রেরয়িতা, পোয়মিকা পরাৎপর॥

তরুণ-অরুণাশ্রয়, করুণা-বরুণালয়, দেছি মে করুণাময়, করুণা-বারি-শিকর। তুমি হে কাল-জনক, মূরতি তপ্ত-কনক, সকল ক্ষণ-গণক, তুম হি ত্রিকাল-ইশ্বর॥

মনত প্রিয়বরে, পেয়েছি ভোমার বরে, অরুদ্ভদ অরিকরে,

ুরক্ষ প্রভো **প্রভা**কর।"

ম্ব অন্তে প্রমদা প্রণত পূর্বসূথে।
চাহিতে দেখেন পতি দাঁড়ায়ে সমুথে॥
গলগগৈকত বাদ, মুথে মৃদু হাদ।
ভক্তিপ্রদা অপরপ রপের প্রকাশ॥
নাথে হেরি বিনোদিনী কন ধীরে ধীরে।
"কি আজা আছে হে প্রিয় কহ এদানীরে। এত যে পরুষ ভাব পুরুষের মন।
দুবাভূত অভিভূত শ্রমীয়ে বচনা।
প্রেয়নীর কাছে দাগু লইতে বিদায়।
আদা-মাত্র সচন-বিকাশ বড় দায়॥
মনেরে ধৈরজ ভোরে বাঁধিয়ে যতনে।
কহিতেছে কথা বীর অমিয়-বর্ষণে॥

<sup>&</sup>quot; আইলাম বিধুমূথি বিদায় লইতে তব কাছে হে!

<sup>&</sup>quot;নিবেদন তব প্রতি আমার আর **কি বল আ**ছে হে 🕃

<sup>&</sup>quot;জয়াজয় রণে পণে নিশ্চয় কথন কিছু নয় হে।

<sup>&</sup>quot; গ্রহ-দোষে যদি প্রিয়ে হয় মন রণে পরাজয় হে 1

<sup>&</sup>quot; যদি আমি প্রাণে মরি, তান সতি, প্রিয়ে পতিপ্রাণা হে

<sup>&</sup>quot;এই করেন প্রাণেখরি ক্লোদরি দুশীলা-প্রধানা হে

''হের দেখা হরণাক্ষি ঈশানে অচল শোভা পায় ছে। "তব ভাতা মেঘরাজ স্বদেনায় আছেন তথার হে॥ "সমরান্তে তথা গিয়ে লবে প্রিয়ে তাঁহার শর্ণ হে। "পত্রহায়ে কোন মতে না হইবে তোনার পাচন হে। ''অনস্তর সাবিত্রী-শেখরে গতি করি পতিবুক্তা হে। "মুপবিত্র যতি-পর্ম ধারণ করিছ স্বর্ণলভা ছে॥ "দেহ-ভাগে পুনরায় মিলন হইবে স্বালোকে ছে: ''আর না ভ্রিতে কভ্ হুইবে বিরুহ্ ফোর শোকে দে 🦥 🕍 🚉 রম্ভর অনুভাইনে, জুড়াইন, প্রেমাদৃত-পানে হে। "নাছৰে বিভিন্ন ভাব চিত্ত ববে সদা এক-ভানে হে॥ "**নাহি তথা জন্ম** জরা ছার ছালা মন্ত্রণা জড়িমা হে। 🍍 📆 হীন ফৌসনের অধিকার অসীমা মহিমা চে॥ "নাহি তথা পাপ-পন্ধ, নাহি তথা ত্রিতাপ তিমির ্ 🖣 সদা কাল পুলার প্রতাপে দীপ্ত বিমল মিহির হে 🗈 "যদি আমি তোমা তেজি আগে যাই দেই দুথ-ধালে 🤫 " ভেৰনা, সুৱায় সুখী হবে সুমি সিদ্ধ মনস্কামে হে 🖟 ন্তনিয়ে পাজর কথা কহিছেন সতা।

ত্তনিয়ে পাজির কথা কহিছেন দতা।
"কেমনে কহিলে নাথ এমন ভারতা॥
"কুমি ষাবে পরপারে হেখা রব আমি।
"কুমি ষাবৈ পরপারে হব অনুগামী॥
"কুমি যাবিব আমি না থাকিব দূরে।
"ব্রিব ও মূথ-শশী মন-দাধ পুরে॥
"ব্রিব ভারত হও নাথ ভূষিব দেবায়।
"আম নিবারিব তথা, অঞ্লের বারু॥

"যদি হে আহে রে।তহও ওণিগাম। ''বিশলা ঔষধে ক্ষত করিব আর্থম। "পুটর অস্ক্-ধারা নয়নের জলে। " मुष्ठाहिए फिर अन विम्क कुछला॥ " রণম্বলে বাড়াইব উৎসাহ-প্রবাহ। " পরাইর মনসাধে পদে উপনাই॥ " পরাটব শিরস্তাণ সন্নাহ সুন্দর। ি বেধেঁ দিব শরাদন শিরোহী অঞ্চর। "কি ভয় আনার নাণ দঙ্গামের ছলে? "রংজপুত্র-তেজ-অধি মম দেহে **ত্লে।**।" " श्री प्रम ভाগारिनास्य चरि व्यवस्य। "ভা ভাবিয়ে নহি আমি ক্ষণেক বিকল॥ "তব অনুগামী আমি জীবনে মরণে। " इन नाथ अनामीरत मरक नरम तरव॥" अनि (প্রদীর বাণী माधू निक्छतु। নদী-পারে যেতে সবে কহিল সত্তর॥ এমন সময়ে জাসি অনুচর কয়। '' वारवारवव पृष्ठ अक भिविरत उपश्र॥ " এই পত্র আনিয়াছে শুন গুণাকর "ৰা পত্র লয়ে করে, পাঠ করে বীরবর 🖁

#### পত্ৰ ৷

" রুন ওহে ভটী-কুল-ভূপাল-নন্দন। ভুত্ব সহ সমূথ-সঙ্গাম অশোভন। মম সহ সহসু সহসু দল বল।

অনুবল মিহিরজ দেন আথগুল ॥
তব সঙ্গে আছে ভটা কতিপয় শত।
ইহাতে সমুখ-রণ নহে ন্যায় মত॥
ইথে অপ্যশ মম ঘ্রিবে সকলে।
তাতএব দুন্যুদ্ধ \* উচিত এস্থলে॥
জানিতে বাসনা তব কিবা অভিলাব।
বিলম্ব না হয়; তাহে কার্যোর বিনাশ।
পাত্র পাঠা করি সাগু হসিত-অধর।
অমনি পাঠায় লিখি তাহার উত্তর॥

# প্রত্যু**ত্ত**র।

"তান হে মন্দোর-পতি-রাচোর-কুমার।

যাহা অভিকৃতি তব, তাহাই আমার॥

কলে পুর্বকল্পে নাহি দিধাভাব মম।

সহসু-রাচোর-সহ শত-ভটা সম॥

তবু তব লোক-লজ্জা রক্ষণ আশয়।

তব মতে মত মম, অনামত নয়॥

আমার বিলম্ব নাই জানিহ বিশেষ।

বরী-পারে যাইবারে দিয়াছি আদেশ॥

স্বিলম্বে প্রিনে নেমেছে সেনা সবে।

স্বিলম্বে পর পারে উপনীত হবে॥"

<sup>\*</sup> ব্রহর পক্ষের সমূথে উভয় পক্ষীয় দুই জন নির্বাচিত। যোগীয় বুজের নাম হত্ব-যুক্ত।

ভাঙ্গি কুশ কাশ বেশা, পুলিনে নামিল দেনা, কিবা শোভা হেরি চন্দ্রায়। প্রভাত-ভানুর-করে, কিবা অক্মক্ করে, আয়িগ কবচ দৰ কায় ॥ শকলের আলে আলে, বিমল অম্ব্র-ভাগে, উড়িতেছে ভট্টার নিশান। প্রভাত-পরনে রঙ্গে, উড়িছে এমন ভঙ্গে, বিপক্ষে কি করিছে আহ্বান? वाश्नीत मधायारन, जारताशे जूतक्र-यारन, সাধু যান লয়ে বনিতারে। 'डेर्फ् किছू मृक्ते नह, क्वित बहाम-इह. শো**ভা পা**য় কানন-মাকারে॥ অগুভাগে জয়তজ, নয়নে **লোহিত** রঙ্গ, বীর্মদে মন্ত অসিরত। পাত-বংশে অবভার, সিংহ-দম মহামার, শিরোদেশ বিশেষ আয়ত॥ ব্যাঘ্দম ভরস্কর, দঙ্গে শত ধনুর্জর, ় স্বল্ল বটে, যুদ্ধে যমন্ত। মরণে নাহিক ভয়, আরোহিয়ে হয়-চয়, নদী পার হয়ে যায় জভে। ' তুরজের পদাঘাতে, প্রনি হয় তরক্তে, গভার মধ্র দেই ধ্বনি। চপার **চপার চপ**, অপ অপ অপ্ অপ্, 🕶 🗷 বলে আবলে দুখ গণি॥

আবর্ত্তে পড়োছে কৈছ, অস্থির তুরন্ধ-দেছ, ঘরিয়া বেড়ায় পাকে পাকে। " **কিন্তু সে দৈন্ধৰ হয়**, তথাপি বাকুল নয়, গরজিয়া উঠে ঘোর ডাকে॥ তুলিয়া বিপুল পুচ্চ, আবর্ত্ত করিয়া তৃচ্ছ, তেজে উঠে পার ভুরুজা। **লুভাতন্ত** জালিকায়, বর্টা কিপরা যায়, বিষম ভাহার পরাক্রম॥ অবিলয়ে দেনাচয়, পারে অবভার্ হয়, वाहिया नहेन निक सान। পড়িল ছাউনা ঠাট, সমর-পশর্প-হাট, ক্লণগাতে হয় শোভমান ॥ এই হল্যো নিরূপণ, পরান্তে হইবে রণ, পূর্বাহে ভোজন-পান-কাল। ্বিশ্রাম-বিলাপ-ভরে, দবে পরিশ্রম হরে, यथाकारन छेम्य विकान ॥ জ্ঞানেতে অবশ অঙ্গ, নিদ্যা যায় জয়তঙ্গ, যেন দ্পু ভক্ত ভীষণ। কাছে অশ্ব অভিরাম, এপঞ্-কল্যাণ নাম, প্রভুর প্রহরী অনুক্রণ॥ হেন ভাবে থাড়া আছে, মক্ষিকা না যায় কাছে. কি সাধা শত্র সমাগম। ু দূরে থেকে নাগরিয়া, জয়তঙ্গে নির্ধিয়া, আরোহিয়া নিজ তুরজম 📳

উপহাদ করণাশে, পেয়ে যায় তার পাখে,
তামনি পাজ্ব অপবর।

চরণ উন্নত করি, উনুচও মূর্তি ধরি,
বিভোষণ করে ছোরতর॥

জাগিনে উটল পাজ, প্রমারণ করি বাহা,
দেখে শক্ আদৃদে উদয।

কিজাদিতে হাদ্য করি, 'কি সাদনা অনুসরি,
হেথায় আইলে নহাশ্য?
হৈরি মেরে নিলু ঘোর, ওপ্রচর কিবা চোর,
দেশরপ বেথি তব গারা।

হিছি একি কাতি স্মাঁ, সিক সিক হীন কমাঁ, হট্যাছ গুলি ডেলি হৈয়ে॥" ডিনি মিহিরজ কয়, "এবহন্য মদ্দম্য,

রণ-বুতে হুছা গেট জন। নাহিক ভাহাব দায়, যুদ্ধকালে নিদ্রা যায়, নভত নভাবা এঘটন॥

নিকটে আইলৈ দোষ, দেখাও আক্রোশ রোষ; মিছে ঘুন ঘুমাইবে কত।

সুথাৰ সম্পান ক্ষেত্ৰে, চির নিমালিত নেত্রে,
সুথো নিদা যাবে অবিরত॥"

জয়তঙ্গ ভদুত্তরে, কহিতেছে হাস্যাধরে,
'দেখা যাবে কত শক্তি কার।

কে কারে পাড়ায় ঘুম, মিছে কেন ধাম ধুম, দে ঘ্যের মন্ত্র তরবার।

8 x 2

আমার বিলম্ব নাই, এই সজ্জা ধরি ভাই,
এক মাত্র প্রার্থনা আমার।
ফুরায়েছে পানপাতে, অলদে অনশ গাতে,
চাহি কিছু সুগার উধার॥
কলা মাত্র হিহিরজ; যথা রক্ত সলিলক,
বর্ণধর মদিরা মোহন।
আপেন আমিয়ে দিল, অনা পাত্র করে নিল,
উভারতে করিল গ্রহণ॥

পানাত্তে উভয় বীর বাহু ছিরা যার।
আপন আপন দলে প্রকাশে প্রভায়।
দুই দল হৈতে আমি রণবাদ্যকর।
বাজাইল ঘোর বাদ্য কাজরা কাজর॥
বাদ্য-অন্তে প্রতিহারী করিল ঘোষণ।
বিগ্রহের হেতুবাদ করিয়া বর্গন॥

# অরণ্য-কমলের প্রতিহারী।

"নাগর-পতির পুত্র মিহিরজ নাম।
নতাবাদী জিতেন্দ্রির শৌর্যা বার্যা ধাম ॥
মন্দোরের যুবরাজ তাঁর বন্ধুবর।
বন্ধু-অপমান-শোধ-হেতৃ অগুসর॥
এই হয় ক্ষত্রধর্ম শাস্ত্রে হেন কয়।
ধর্ম-যুদ্ধে রিপুকুল পাইবেক ক্ষয়॥"

## সাধুর প্রতিহারী।

"পাল্-কুল-দীপ এই জয়তম বীর।
পারজেনে প্রভঞ্জন, প্রতাপে মিহির॥
বীর-চূড়ামণি মাধ্ মাধুর প্রধান!
মানীর সন্মান গাঁরে প্রাণের সমান গ কারে: মান-নাশে তার নাই কভু মতি।
ফেই দেয় হেন দোস দেই দুইট অতি॥
নাায়ের বিপল্লে গেই রণে মন্ত হয়।
সেই রণে, পরাজয় ভাছারি নিশ্চয় :
এই জয়তয় বীর জয়ের নিশান।
কে আছে বে শক্রলে তাঁছার সমান ?"

### মিহিরজের উক্তি।

'' লাজ হে সাজ হে যত সাজ বীরগণ। নিজ নিজ সম্পোণ্য সহক্র রণ॥''

### জয়তম্বের উক্তি।

''নাম-ধর্মে দকলে রাখিয়ে নিজ চিত। প্রতিকূল-প্রতি দেহ শান্তি সমুচিত।''

আদেশ পাইল, অমনি গাইল, বাজিল সমর-ভূরী রে।
াগে ভয়াতুর, হিয়া দুরুদুর, ফজরী ফলরী ভূরি রে॥
াধিছে ফগড়া, নাদিছে দগড়া, কড়া কড়া করি রে।
াজিছে ফয়, সহিত ডফ, লফ দয় ভরি রে।
াজনের তাল, পরম রসাল, সেই তালে তাল রাখি রে।
াপাইয়ে ঢাল, যায় সেনা-পাল, শিরদেশ সব ঢাকি রে॥

নোম্থে বেমন্তি, ভাগীরখী-গতি, বাঁধা ছিল কিছুকাল রেঃ করিবর বলে, ভেদিল অচলে, ধাইল দ্রোভ বিশাল∠রে ॥ বাজনের বলে, দেই রূপ চলে, উভয় দলের দেনা রে। শিরোপরে পর্ উড়ে ফর ফর্, তরক্ষে উচিল ফেণা রে : দুই থর নদী, মিলে আসি ফদি, ভাবছ ভাবুক দল রে। ভাঙি কক্সা কোড়, ভয়ানক ভোড়, শন্ত পাকে ফেরে জল রে-হর কাটাকাটী, নাহি কারো ঘাটি, সমরে উভয় সম রে: नरव नम-छन, रकड् नरङ् छैन, रकड् नरङ् किছू कम रहः। আপন আপন, বাদা টেই জন, ভারি দহ দেই লড়েরে तरन धान गात्, हिर्ड अडे हात्, मूर्य त्नक्ट्म भरफ हा ॥ रम तब-विद्यात, कि वनिव आत, धनह **जुल्लाकाति** रह। আমি হীনমতি, বিধান ভারতা, ধরুপ রচনে নারি রে॥ যুবে দুই বার, রুধিয়ে শরীর, প্লাবিত হইল অতি রে। থার তরবার, দামিনী আকার, অম্বরে করিছে গতি রে॥ পরাক্রমে পাত্, থ্যাত মহাবাত্, মিহিরজ মিহিরজ রে : তুলা দুই জন, করিতেছে রণ, যেন দুই দিগ্রজ রে॥ কিবা মনোহর, দুই হয়বর, তার তারা সম ধায় রে। মুথে ফেণ লাল, থাড়া কেশ-জাল, স্বেদ বহে নৰ কায় বে আথেটিক প্রায়, ছুটে ছুটে যায়, প্রভুর মানস বুকে রে । **খুলে খাঁড়া থাপ, মারে কোপকাপ, মহিত প্রতাপ যুকে** রেছ শির হাড় ভাঙ্গি,মারিভেছে টাঙ্গি,লোহে যার রাজি শরীরে: উচ্চ স্বর করি, কেহ কহে হরি, কেহ কহে মরি মরি রে॥ কাটা কারো শির, কাহার শরীর, বেঁধা শত তীর-**ফল্**রে : क्ट् भाषा भृतन, पूरे आँथि जूल, भएएए धर्गी-जला दि ।

এই রূপে দমর হইল ছোরতর। রুধিরের সোত বহে অবনী-উপর॥ ফেউরবে ফেরুপাল ফেরে পালে পাল। নর-মেদ-মাপ্স থার আনন্দে বিশালয় व्रवश्राम मकुनी शिविनी माम माम পালে পাকে ফেরে কোলাহল কুতৃহলে। জয়তকে নিহিরজে যুক্ত **অনুপ**ম। কারুমাত্র কোনক্রমে নাহিক বিভুম। পূলার পুনর তনু মেন ধূমময়! তাহে রুপিরের পার স্বেদ নহ বয়॥ হয় তেজি দুই বার ধরণা-উপর। অভি ঘোর গদা-যুদ্ধে হল্যে অগুসর॥ ক্ষণে ক্ষণে নামালিয়া লইতেছে চোট্। करन दरम कानुभारित, करन रमय रया है। ঢালেনে नातिष्ट চোট্ পট্ পট্ রবে। भेष्ठेर ताजिए एयन **जानम-उ**ष्मति॥ কি চিকণ চালাকী চতুর-চ্ডামণি। চপল চর্ণ কিবা চপলা-চল্মী॥ চকিতে পড়িছে ধরা, চকিতে উটিছে। চকিতে যুটিছে, পুনঃ চকিতে ছুটিছে॥ কভক্ষণ পরে কর্মা দেখহ বিধির। স্থলিত চরণ হৈল মিহিরজ বার। অমনি ক্লণেক পাছ বিলম্ব না করি । প্রারিল কথে ভার অসী ভয়কীয়া।

পাছিল বীরের চূড়া মিহিরজ নাম।
জয়নাদ ভাউর-শিবিরে অবিশ্রাম।
রাচোর-শিবিরে দবে হল্যো বিষাদিত।
অরণ্য-কমল মুখ-কমল মুদিত।
তবু রণে নাহি ভঙ্গ ঘন্দে ছন্দে ভিড়ি।
সম্মুখ-সঙ্গানে দবে খুঁজে স্বৰ্গ-সিড়ী।
কিবা চমৎকার বৃত্তি, কিবা চমৎকার।
পর্ঘন্দে দেহ-দানে, প্রহিত সার!
শেষ-প্রায় সমুদায় বীরের প্রধান।
হইল সমর-ক্ষেত্র শ্রামান সমান॥

অনন্তর সাপু সদাশিয়।

অরণ্য-কমল সহ সমরে প্রবিষ্ট হয়।

কর্মদেরা দুই করে, সজ্জা লয়ে যত্ন-ভরে,
সাজাইছে সমাদরে, স্বায় প্রিয় রসময়॥

রূপ হেরি রভি পায় লাজ।

বিধাতার আদ্য সৃষ্টি যুবভাগণ-সমাজ।

চকিত মৃগ-লোচনা, অমৃত মিত বচনা,

কিবা ভুরুর রচনা, বারিজে অলি-বিরাজ॥

কল্যাণী কমলা অবভার।

কুল-কমল-আকরে ফুল্ল পান্মিনী আকার।

গুণময়ী চারুশীলা, লীলা হেতু জন্মিলা,
প্রিয়বরে সাজাইলা, কিবা শোভা চমৎকার

কুরুবক নিজ দুটি কর। বিচিতা করচ দানে চাকে নাথ-কলেবর। শিয়ে দিল শিক্সাণ, কৃপাণ করিয়ে দান, অঞ্জলে করে শ্লান, নয়ন নীলেদ্যির॥

হোর বার হইল বারুল।
কোলে লয়ে প্রেরদীরে চুম্বরে মৃথ রাজুল।
লিরে দিয়ে পল্লানি, কহিছে আস্বাদ বাণী,
বৈষ্যাধর ছে কল্যানি, কালী কুলাবেন কুল।

র ন মারি রাচোর দুজ্রে।
জয় জয় রবে আমি ফিরিন সন্ধা-সম্য ।
এত দলি পুনরার, চুয়ি প্রাণপ্রমদার,
রণহলে মায় রায়, আরেছেন করি হয়।

ওদিণেতে অর্ণা-কনল।
বীর্মদে জোগমদে আরক্ত সাথি-যুগল।
আারোহি ত্রজ্বর, হইলেক অগ্নর,
হ্রি সহ্ যুকিবারে, এলো যেন আশগুল॥

মিলিল আসিয়ে দুট বার। বন্ধিন ভাবেতে চড়া উন্নত আয়ত শির। যেন এক সিংহী তরে, দুট সিংহ রণ'করে, গর্জিত খোর স্বরে, ক্ষ্মিত দুই শ্রীর॥

কিরপে বর্ণিব দেই রণ।
বর্ণনায় বর্ণহারে, কে পারে করে বর্ণন?
কোন বার নহে ঘাটি, চটাপটী কাটাকাটী,
ফুটী-সম ফোটে মাটী, তুরণ গুর-ঘাতন ।

ভীষণ গজ্জন ঘন ঘন।

ধেন দুই দিপ-ছন্দ্ে দিগন্তে করে খোষণ।

কিবা জহু ন্নি-কন্যা, গারা-পাতে ধরা-ধন্যা,
আইলে প্রবল বন্যা, গারজে অতি ভীসণ॥

ছলে চারি চঞ্চল ন্যান।

মেন আদি চারি এবঙ উদর হল্যো তপন। চারি চফে রক্তহ্বি, অনল লভিত হাই, কিসা কালান্ত্রে রবি, প্রকাশ করে গগন।।

হত্তিত মত দেনা গণ।
দুই বার পরোক্রম দুরে করে নিরীক্ষণ।
বচারত দুইদলে, ধনা লাগু কেহু বলে,
কেহু অরণা-কমলে, দেয় জয়-সম্থোধন।

তরবার ঘোরে বন ধন্। সিঙ্গুতটে শতপাকে আধর্ত ফেরে যেমন। এল সোজা এই বন্ধ, কটিডটে কুলে টক্ষ, টুটে ভরবার এজ, বরিষয়ে গ্রাশন।।

টপটেপ্টপকে টাঙ্গন। নিজ নিজ প্রভূ-প্রাণ রক্ষণেতে সমতন।

বিপক্ষের অদী-লক্ষে, স্থাপন করিয়া চক্ষে, বাঁচাইছে নিজ পক্ষে, চালনা করি চরণ।।

অন্ত্রাঘাতে অরণ্য-কমল।

যেন দিবা দিপ্রহরে লোহিত সহসুদল।
প্রায় প্রাণ ওঠাগত, তবু রণে জ্ঞান-হত,
বিষম বিক্রমে রত, হৃদে জলে ক্রোধানল।।

হের দেখে এমন সময়। হয় ছেড়ে সাধুবীর ধরায় পতিত হয়। পুনঃ না উটিতে বসি, অরণ্য-কমল পশি, হাদ্য় উপরে কমি, মারলি অসী দুর্জায়।।

যেন যজ-পবিতের প্রায়।
মুহুদ্রেক কাটিলেক দাপুর কাঞ্চন কায়।
রণভূমে ডাকে শিবা, বিগত হটল দিবা,
ভানু অস্ত শোভ। কিবা, সিন্দুর হুদে লুকায়।।
ভট্টির-শিবিরে হাহাকার।

কি হটল কি হটল, মুখে মাত্র সভাকার। আমাদের মবে ফেলে, কোগা সাধু কোথা গেলে, বিষম শোকামি ছেলে, করিলে হে ছার থার!

কর্মদেরী কনক-লতার।
শুঝাইল চাকুমুঝ প্রদোষ-কমলাকার।
ছিন্ন-মূলা যেন লতা, নিপ্তিতা পতিবুতা,
শ্বণেক চৈতনা-হতা, নয়নে সহসুধার।।

ক্ষণেকে হইয়ে সচেতন।
প্রহারিয়ে পুনঃ পুনঃ কপালে কর-কন্ধণ।
পুর্ব্বকথা সকাতরে, শোক মগ্র ভগ্ন মরে,
কহিছেন সহোদরে, পরিহরিয়ে রোদন।।

আর মম জীবনে কি ফল ভাই, আর বল বাঁচিয়ে কি ফল? নাথ-শোকে হৃদয় বিকল ভাই, জলে যেন প্রবল অনল॥ এ অনল জুড়াইতে আছে ভাই, কেবল দে চিতার অনল। দেহ তার অয়োজন, এই শেষ-ভিক্ষা ভাই করহ সক্ষা।

"পতিরতা পত্নী যেই, পতিবুতে রতি তার জীবনে মরণে 🖟 " হারাইয়ে পতিধন, যতি-বুতে বুতা দেই হইবে কেমনে 🖠 '' একান্ত যাহার রতি মতি দেই পতি-পদ-পদ্ধজপূজনে ! " কেমনে ধ্যাইনে বিভূ বিশ্বপতি খ্যানে, নিদিখ্যাদনে, মননে : "কুপোতিনী কপোত ধিয়ায় হায়! বিধি আনি মিলাইল ভায় ''হইতে না হইতে মিলন-দূএ, ঘটিল বিরহ যোর দায়।। "কোথা থেকে আলল নিয়াদ জুর,কপোতে মারিল বিখবাণে : "কাতরা কপোত-বদ বিরহের নানে, কিবা আখাদ পরাকে? " উদয় অচলে দিনকর, হেরি হাদ্যন্থী হয় কমলিনী। "হাসিতে,না প্রকাশি**তে** মূখ,মেহরাশি আসি করিল ম<sup>্</sup>লনী, "কোথা লুকাইল দিনকরে, হায়! সরোজিনী বাঁচিৰে কেমনে " জীবনে জীবন্-আশা ছাড়ে দেই, তার মাত্র জীবন তপনে ॥ " डाइ डाइ याई (म उशन-लाटक, यथ) प्रम इन्टार्व धन : " আর মিছে প্রনোধে কি কাম হায়<sub>!</sub> বিহনে সে জীবন-জাবনঃ "নন দাধু দামান্য মানুষ ভাই। শাপ-ভুষ্ট জনমিলা কাম। "কিছু দিন করে থেলা চলি গেলা নিজস্থানে, যথা যোগ্য ধাম৷" এত বলি শারদ সরোজ-মুথী, অভিষিক্ত অঞ্চ হিমহারে ! পতি এর কৃপাণ লইয়ে করে, স্বীয় বাম বাহুতে পুহারে। ছিন্ন কর ভূষণ সহিত, সহোদর-হস্তে করি সমর্শীণ। "কহে রুন রুন ভাই, করিছ পালন, মম চরম বচন। আমাদের কুলকবিবরে, দিও এই হস্ত রতন-মণ্ডিত। সতীত্বের সঙ্গীত-আখ্যানে ভাই, গান যেন দাদীর চরিত।" व्यनस्तर पुराजादत कृशान नित्य किहर उट्ट विनस वहन। " করবালে ছেদছ দক্ষিণ বাহু, হৌক মম দুথেতে মরণ।।

'' এই হস্তু পাঠাইও আমার হৃদয়-নাথ-পিতার নিকটে। - "জানিবেন এই কথা তিনি ভাই,বধূ তাঁর দুত-যোগ্য বটে। "পিতা স্থানে দাদীর এশেষ ভিক্রা, দাধুসহ দহি কলেবর। " এই স্থানে সরসী থানন করি, নাম দেন কর্ম-সরোবর 🙌 বাণী-শেষে ধরাদনে বরাননা, পাতি-পাশে পতিতা হইলা। দেনা-মাধ্যে উটিল রোদন-জ্বনি, দবে কছে 'ধন্য পুণ্যশীলা।' ৰুবীভৃত ক্ষতিয় হাদ্য সৰ, যাহাদের ব্যবসাসমর। বাহাদের রুপিরে পুলক, বহে তাহাদের নয়ন-নিক্র।। শোকস্বর উচে, উভর দেনায়, নিরাস্থাদ অরণাকমল। কর্মদেরী জীবন তেজিলা খনি, হল্যো অতি হাদয়ে বিকলা। শত শত আখাত শরীরে, তবু তাকে কিছু না ভাবে যাতনা! কর্মদেরী-শোকে দহে প্রাণ, কোন মতে আরু না মানে সান্ত্রনা ভাবে "আমি পাপী নরাগম,পতিপ্রাণা দতী প্রাণনাশ-ছেতু ৷ ারতিপতি অনর্থের মূল, ধিক। ধিক্রে ধিক্রে মীনকেতু! " এ রমণী-রতন-অযোগ্য আমি, ধীরবর **দাধু যো**গ্য ব**র।** ্র এ প্লেম-পঙ্কজ-বনে আমি দুরাচার, ছার দিরদ-সো**দর**্থা<sup>ঞ্চ</sup>

হেথা মেঘরাজ মতিমান, চিতা দাজাইল মহা আজ্মরে।
মূপে মূপে চন্দনের দার, চন্দনার তীরে, শোভে স্তরে স্তরে ॥
দক্ষরিদ গুণাপুল পুভৃতি, নবনীত দৃত, শত শত ভার।
পুণাপুল মহারিদ কলিল, বিধিমত যত, প্রয়োজন আরে॥
দাজাইল নেতের বদন চারু, রজতের পালক্ষ দুন্দর।
শোয়াইল ভাহাতে যুগল তনু, প্রাণগতে দৃশ্য মনোহর!
বিহ্নিত উভয় শবের মুখ, মরণেতে এত রূপ ঘটে!
দেই ভাব বর্ণিব কি আরে আদি, ভাবহ ভাবুক চিত্ত-পটে॥

লাধু, লাধু-প্রিয়া মথ প্রেমহুদে, ভাবরে আকুক জনগণ।
লেভাবের ভাবৃক কোথায় হায়! কে ভাবে লেভাবের কারণ।
অলিল বিষম হভাশন, কালানল সম সেই বৈশ্বানর।
দহিল কাঞ্চন ভনুষয় চাকু, কোথা বা লে মাশুরি নিকর?
এই দেহে মিছা অভিমান হায়! ইথে লোক যত্ন কেন করে?
মাটির শরীর এই, মাটি হবে পরে, কথা জানে সধ নরে।।

বিচেতন শোকে মন প্রাণ, কর্মদেবী-প্রিয় সহচরীগণ।
ক্ষিপ্ত-প্রায় ভুনে, জ্ঞানহারা, দাবা-দগ্ধ মৃগী স্থরূপ লক্ষণ।
বৈড়ে চিতানল,মূথেরব,কোথা গেলে দেবি! দেখা দেহ সতি
ভোমা ভিন্ন কিকাষ জীবনে,হায়। আমাদের কি হইবে গতি

## **সহ**চরীদিগের উক্তি গীত।

## ললিত।

"হায়, এ সময়ে সতি, রহিলে কোথায়? হায়!
ভামা ভিন্ন চারুশীলে, কি কাষ এ শ্না কায়?
ধনা ধনা পুণাবতী, দেবী-অংশ তুমি সতী,
পবিত্র এ বসুমতী, তোমার কুপায়, হায়!
তুমি নিজ পুণাবলে, দিবা-লোকে গেলে চলো,
দাসীদের স্নেহছলে, আর কে সুধায়? হায়!
আমাদের প্রীতি জনা, নাহি ছিল ভাব অনা,
সবে সহোদরা গণা, করিতে মায়ায়? হায়!"
চারি মাস অন্তে হয়ে অন্তরে বিকল।
প্রাণভাগা করিলেন অর্ণা-কমল।।

সাপুর হইল যেই দিনেতে পতন। (नहे पित्न कप्रत्नत होमानी घटेन।। সেই বৈর-শোধনার্থ প্রধানুক্রমে। ভর্তীনহ রাঠোর যুক্তিল পরাক্রমে।। অবশেষে ভট্টীদের হইল বিজয়। গ্রাম্য-গাতে সে সকল ব্যক্ত দেশময়।। ষেই সরোবর-কথা কহিলে গ্রামন। সেই কর্ম-সরোবর পুণ্য-তার্থ-স্থান।। রতুশিলা বির্চিত সতীর আকৃতি। ধরাধামে অবভার্ণা যেন দেবা ধৃতি । महोद्र मार्ग्याद्य संरव यत्रवीया छाछ। অধ্না তাঁহার তুলা আছে কেনা সভী? এ হেন অমূল্য নিধি ধরায় কি ধরে? দিব্য লোকে পতি সহ সুথে কাল হরে।। এত বলি নিবারিলা সার্দ্ধের তান। শ্রোত্রণ যেন মুগ্ধ মধুপ-সমান।

मगारा ।